Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

आहार पाणी वस्त्रादिक आपियां,
तो श्वान ज्यूं पूंछ हलावे।
करडो कह्यां उठे सोर अग्नि ज्यूं,
गण छोडी एकल उठ जावे।।

अविनीत को भोजन, पानी, वस्त्र आदि दे दिए जाते हैं तो वह कुत्ते की तरह पूंछ हिलाता है। उसे कड़ा कह दिया जाता है तो वह उसी प्रकार संघ को छोड़कर अकेला हो जाता है, जैसे सोरा अग्नि से।

– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 11 • 16 दिसम्बर- 22 दिसम्बर, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 14-12-2024 • पेज 12 • ₹ 10 रुपये

तारने या डुबोने वाली नौका बन सकता है शरीर : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

भाग्य जैसा भी हो, अच्छा पुरुषार्थ करते रहें : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 12

Address Here

जीवन में सादगी और चिंतन में रहे उच्चता : आचार्यश्री महाश्रमण

नागरिक अभिनन्दन समारोह में पूज्य प्रवर को सौंपी शहर की चाबी

अंकलेश्वर।
06 दिसम्बर, 2024

तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी सजोद से लगभग 10 किमी विहार कर अंकलेश्वर के ई एन जिनवाला हाइस्कूल में प्रवास हेतु पधारे। मां शारदा टाऊन हॉल ऑडिटोरियम में आयोजित स्वागत समारोह में पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए परम पूज्य ने कहा कि जीवन में मानसिक शांति, मनोबल और शरीर बल अच्छा होना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। लेकिन इनसे भी बड़ी उपलब्धि है— संन्यास, धर्म और अध्यात्म की साधना।

शरीर का बल इस जीवनकाल तक ही उपयोगी है, लेकिन धर्म और अध्यात्म की साधना आगे भी हमारे हित में रहती है। साधु के लिए साधुपन तो उसके जीवन का आधार है, लेकिन गृहस्थ जीवन में भी धर्म और अध्यात्म का पक्ष अत्यंत महत्वपूर्ण है। मंत्री या राष्ट्रपति का कार्यकाल एक समय के बाद समाप्त हो जाता है, परंतु साधु जीवन की अंतिम सांस तक साधु बना रह सकता है। इसी प्रकार, धार्मिक व्यक्ति या श्रावक भी जीवन के अंत तक

अपनी धार्मिकता बनाए रख सकता है।

साधु के लिए साधुपन से बड़ी कोई चीज नहीं हो सकती। यदि साधना सुदृढ़ है, तो कोई चोर इसे चुरा नहीं सकता। साधुपन सबसे सुरक्षित धन है। भौतिक धन केवल इस जन्म तक उपयोगी हो सकता है, लेकिन धर्म रूपी धन आगे भी काम आता है। इसलिए, हमें धर्म और साधुपन की संपदा को सुरक्षित रखने का प्रयास करना चाहिए।

गृहस्थ को भी धर्म करने का अधिकार है। गृहस्थ जीवन में त्याग और संकल्प से अध्यात्म की साधना की जा सकती है। अणुव्रत गृहस्थ के लिए एक अनमोल संपदा है। चाहे गृहस्थ किसी भी क्षेत्र में हो, उसे धार्मिक और अणुव्रती बने रहना चाहिए। गृहस्थ को अपनी वाणी, क्रोध नियंत्रण और ईमानदारी पर ध्यान देना चाहिए। जीवन में सादगी और चिंतन में उच्चता रहे तो जीवन बढ़िया बन सकता है।

गुरुदेव तुलसी द्वारा प्रदत्त अणुव्रत को जैन-अजैन सभी स्वीकार कर सकते हैं। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम व्यक्ति की चेतना को जागृत रखने में सहायक होते हैं। ईमानदारी के लिए झूठ बोलने और चोरी करने से बचना चाहिए। गुस्सा मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। शांति और संयम से रहने का प्रयास करना चाहिए। ध्यान, अध्यात्म से जुड़ा एक महत्वपूर्ण उपक्रम है, जो अनासक्ति की साधना को प्रोत्साहित करता है। जीवन में अच्छाई और उत्तमता की ओर बढ़ने का प्रयास हर किसी का उद्देश्य होना चाहिए।

पूज्य प्रवर ने आगे फरमाया कि आज थोड़े अंतराल के बाद, पुनः अंकलेश्वर में आना हुआ है। यहां धार्मिक और आध्यात्मिक गतिविधियां सुचारू रूप से चलती रहें। साध्वीप्रमुखाजी विश्रुतविभाजी के जन्म दिवस पर पूज्य प्रवर ने फरमाया - वे 68वें वर्ष में प्रवेश कर रही हैं। साध्वी प्रमुखाजी निरंतर धार्मिक और आध्यात्मिक सेवा करती रहें तथा उनका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहे।

(शेष पेज 10 पर)

दया और अनुकंपा संसार रूपी समुद्र को पार करने में है सहायक : आचार्यश्री महाश्रमण

भरूच।
07 दिसम्बर, 2024

भैक्षवगण सरताज आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ नर्मदा नदी के किनारे बसे भरूच शहर में पधारे। एक कथा के माध्यम से प्रेरणा प्रदान करते हुए महातपस्वी ने फरमाया - सुपात्र को दान देना चाहिए। संसार में लौकिक दान अनुकंपा और दया के भाव से दिया जाता है, लेकिन साधु-संतों को दिया गया दान संयति और लोकोत्तर होता है। हमें अपने गुरूजनों का आदर करना चाहिए और सभी जीवों के प्रति दया और अनुकंपा का भाव रखना चाहिए। यह दया न केवल सुखदायक है, बल्कि संसार रूपी समुद्र को पार करने में भी सहायक है।

बिना किसी कारण किसी को दुःख नहीं देना चाहिए। न्यायपूर्ण और नैतिक व्यवहार करना चाहिए। दूसरों का भला करने वाले कार्यों में लगें। हित केवल लौकिक नहीं होता, आत्मा का आध्यात्मिक हित भी महत्वपूर्ण है। लक्ष्मी प्राप्त होने पर अहंकार से बचें। अच्छे लोगों की संगति करें और उनसे प्रेरणाएं लें। अच्छे विचारों वाली पुस्तकें पढ़ें। हमेशा ध्यान रखें - बुरा न देखें, बुरा न बोलें, बुरा न सुनें, बुरा न सोचें और बुरा कार्य न करें। अपने जीवन को अच्छे कार्यों से सुशोभित करें।

पूज्यवर का प्रवास के.एल. जैन के निवास स्थान पर हुआ। पूज्यवर के स्वागत में तेरापंथ महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। सभा अध्यक्ष नरेंद्र छाजेड़, थानमल मालू और के.एल. जैन ने अपनी भावनाएं अभिव्यक्त कीं। आध्यात्मिक भेंट के रूप में संकल्प पूज्यवर को समर्पित किए गए, और पूज्यवर ने त्याग करवाए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
16 दिसम्बर- 22 दिसम्बर, 2024

निवृत्ति की साधना है ध्यान : आचार्यश्री महाश्रमण

लुहारा।
08 दिसम्बर, 2024

जिन शासन के उज्ज्वल नक्षत्र आचार्यश्री महाश्रमणजी ने लुहारा स्थित विद्यालय में अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि मनुष्य संज्ञी होता है, जिसके पास मन होता है। मनुष्य दो प्रकार के बताए गए हैं—पहला संज्ञी मनुष्य, जिनके पास मन होता है, और दूसरा असंज्ञी मनुष्य, जिनके पास मन नहीं होता। असंज्ञी मनुष्य अत्यंत सूक्ष्म होते हैं।

यह आश्चर्यजनक है कि इन्हें मनुष्य क्यों कहा गया है। इसका कारण यह है कि असंज्ञी मनुष्य, संज्ञी मनुष्य की संतान होते हैं। इन्हें संमूर्च्छिम या अमनस्क भी कहा जाता है। मन, एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। मन के द्वारा मनन, चिंतन, कल्पना और स्मृति की जा सकती है।

मन की चंचलता भी होती है, जिसे ध्यान के माध्यम से नियंत्रित किया जा सकता है। संसार में विभिन्न ध्यान पद्धतियां प्रचलित हैं। ध्यान का अर्थ है मन को एकाग्र कर किसी केन्द्र पर लगाना, निर्विचार होना, और शरीर, वाणी तथा मन का निरोध करना।

हमारी प्रवृत्ति कर्मशील होती है, जबकि ध्यान एक निवृत्ति की साधना है। आचार्यश्री तुलसी के समय एक विशेष ध्यान पद्धति विकसित हुई जिसे 'प्रेक्षा ध्यान' नाम दिया गया। वर्तमान में यह पद्धति अपने पचासवें वर्ष में प्रवेश कर चुकी है, जिसे 'प्रेक्षा ध्यान कल्याण वर्ष' की उपमा दी गई है।

जैन दर्शन में चार प्रकार के ध्यान बताए गए हैं:- आर्त्त, रौद्र, धर्म और शुक्ल ध्यान। इनमें आर्त्त और रौद्र ध्यान अशुभ हैं और पाप कर्म को बांधने वाले हैं, जबकि धर्म और शुक्ल ध्यान शुभ हैं। जैसे शरीर में सिर और वृक्ष में मूल का महत्व है, वैसे ही साधु धर्म में ध्यान का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है।

ध्यान के साथ अणुव्रतों और स्वाध्याय की साधना से अध्यात्म मजबूत होता है। अष्टांग पद्धति में यम-नियम का भी विशेष महत्व है। हमारे जीवन में अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह की साधना चलती रहनी चाहिए। ये पांच महाव्रत अत्यंत ऊंचे आदर्श हैं, जो चित्त को निर्मल बनाते हैं और कल्याण सुनिश्चित करते हैं।

ध्यान के दो प्रकार हो सकते हैं। पहला, शरीर और इंद्रियों को स्थिर कर ध्यान करना। दूसरा, हर कार्य करते हुए भी ध्यान रखना। ईर्या समिति के माध्यम से सतर्कता और चित्त की एकाग्रता संभव है। यह चलते-फिरते ध्यान का अभ्यास हो सकता है।

यात्रा करते समय भी ध्यान किया जा सकता है। काम में ईमानदारी रखना भी धर्म का हिस्सा है।

शनिवार को सायं 7 से 8 बजे की सामायिक कहीं भी की जा सकती है। धर्म को अपने भीतर गहराई से उतारने का प्रयास करें। जितना संभव हो, धर्म को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं।

पूज्यवर के स्वागत में स्कूल की कोऑर्डिनेटर जया चोरसिया ने अपनी भावना व्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

तारने या डुबोने वाली नौका बन सकता है शरीर : आचार्यश्री महाश्रमण

सजोद।
05 दिसम्बर, 2024

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमणजी प्रातः हंसोट से विहार कर सजोद के सार्वजनिक विद्यालय में पधारे। पूज्यवर ने अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा कि हमारे जीवन में शरीर और आत्मा इन दो तत्वों का योग है। जहां शरीर विहीन आत्मा है, वहां ऐसा जीवन संभव नहीं है और आत्मा विहीन शरीर में भी जीवन नहीं होता। जब आत्मा और शरीर का सम्मिश्रण होता है, तभी सक्रिय जीवन संभव होता है।

आत्मा स्थायी तत्व है, जबकि शरीर अस्थायी तत्व है। शास्त्रों में शरीर को भी महत्व दिया गया है। इसे नौका के रूप में उपमित किया गया है। आत्मा को भवसागर पार करना है, तो उसे नौका की आवश्यकता है, और यह भूमिका शरीर अदा करता है। यह शरीर तारने वाली नौका भी बन सकता है और डूबोने वाली नौका भी। यदि जीवन में आश्रव (कर्म प्रवाह) के छेद हैं, तो यह नौका डूबने का कारण बन सकती है।

मूलतः पाँच प्रकार के आश्रव होते हैं, और उनका क्रमिक भार इस प्रकार है:

1. मिथ्यात्व आश्रव : इसका भार 10,000 है।

2. अव्रत आश्रव : जब यह कम होता है, तो भार 2,000 कम हो जाता है।

3. प्रमाद आश्रव : इसके कम होने पर 300 का भार और घट जाता है।

4. कषाय आश्रव : जब यह निरूद्ध हो जाता है और बारहवां गुणस्थान प्राप्त होता है, तो 40 का भार और कम हो जाता है।

5. पुण्य रूप में शेष भार : 5 का भार रह जाता है, जिसे अयोग संवर द्वारा समाप्त किया जा सकता है।

जब सभी कर्मबन्ध समाप्त हो जाते हैं, तब आत्मा मुक्ति की दिशा में अग्रसर होती है।

मिथ्यात्वी व्यक्ति भी तप की आराधना कर ऊंचे देवलोक, नव ग्रेवैयक तक जा सकता है, भले ही वह अभवी हो। हालांकि, अभवी मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता। आचार्य भिक्षु ने कहा है कि मिथ्यात्वी भी शील और तपस्या के माध्यम से धर्म का लाभ प्राप्त कर सकता है। धर्म और निर्जरा के माध्यम से व्यक्ति की आत्मा को शुद्धता प्राप्त होती है। सम्यक्त्व और साधुपन का निश्चय होना आवश्यक है, चाहे वह भेष साधु का हो या गृहस्थ का। यही संवर रूपी नौका भवसागर पार कराने का साधन बन सकती है।

आज इस शिक्षालय में आना हुआ है। यहाँ के बच्चों में अच्छे संस्कार जैसे धर्म, अहिंसा, नैतिकता और नशामुक्ति की भावना पुष्ट हो।

विद्यालय की प्रधानाचार्या भाविषा पांड्या ने पूज्यवर के स्वागत में अपनी भावनाएं प्रकट की। उपासक प्रभुभाई मेहता ने गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

विशाल रैली के साथ मंगल विहार

भीलवाड़ा।

चातुर्मासिक प्रवास संपन्न कर साध्वी कीर्तिलता जी ठाणा–4 का तेरापंथ भवन नागौरी गार्डन से मंगल विहार हुआ। साध्वीश्री ने गांधी निवास पर प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि श्रावक-श्राविकाएं अधिक से अधिक धर्म, ध्यान, त्याग, तपस्या, स्वाध्याय करते हुए अपने समय का सदुपयोग करें।

चातुर्मास काल में सहवर्ती साध्वी शांतिलताजी, साध्वी पूनमप्रभाजी, साध्वी श्रेष्ठप्रभाजी का अनन्य सहयोग रहा। भीलवाड़ा क्षेत्र की सभी संस्थाएं जागरूक एवं सक्रिय हैं। संघ की हर संस्था ने आध्यात्मिक गतिविधियों से जुड़कर कर्म निर्जरा का अच्छा लाभ लिया। सभी संस्थाएं विकास का परचम लहराएं।

गांधी निवास पर लक्ष्मी लाल गांधी ने सकल समाज का स्वागत करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की। निष्ठा गांधी एवं परिकर की बहिनों ने स्वागत गीतिका प्रस्तुत की।

इस अवसर पर भीलवाड़ा महापौर राकेश पाठक ने साध्वी वृंद के प्रति मंगल भाव प्रकट करते हुए तेरापंथ नगर में महाश्रमण द्वार नाम की घोषणा की। साध्वीवृंद गीत का संगान किया।

विगत रात्रि में साध्वी कीर्तिलताजी के सान्निध्य में आयोजित मंगल भावना कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष जसराज चोरड़िया, महिला मण्डल अध्यक्षा मैना कांठेड़, अणुव्रत समिति अध्यक्ष अभिषेक कोठारी, टीपीएफ अध्यक्ष प्रशांत सिंघवी एवं समाज की संस्थाओं के पदाधिकारियों ने मंगल भावों की अभिव्यक्ति दी।

तेरापंथ महिला मंडल व भिक्षु भजन मंडली ने श्रद्धासिक्त मंगल विदाई गीतिका की प्रस्तुति दी। युवती बहिनों द्वारा साध्वी समुदाय की विशेषताओं को दर्शाता हुआ लघु संवाद प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन एवं आभार सभा मंत्री योगेश चंडालिया ने किया। कार्यक्रम में श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

'शांति एवं शक्ति की ओर' कार्यशाला का आयोजन

पालघर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल पालघर द्वारा आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी डॉ. पीयूषप्रभा जी जी ठाणा-4 के सान्निध्य मे तेरापंथ भवन में प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया।

मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत के संगान से किया गया। स्वागत वक्तव्य महिला मंडल अध्यक्षा संगीता चपलोत द्वारा किया। कार्यशाला का प्रारंभ प्रेक्षाध्यान गीत के संगान से किया गया। साध्वी डॉ. पीयूषप्रभाजी ने प्रेक्षाध्यान का अर्थ, उसका इतिहास और जीवन शैली के बारे में प्रेरणा देते हुए कहा प्रेक्षाध्यान आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी द्वारा तेरापंथ धर्म संघ को दिया गया बहुत बड़ा अवदान है।

प्रेक्षा ध्यान एक ऐसा आध्यात्मिक उपक्रम है, जिसके द्वारा कई बीमारियों से निजात पा सकते हैं और शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक तनाव को भी दूर किया जा सकता है। प्रेक्षाध्यान का एक सूत्र है मैत्री का प्रयोग जिसके माध्यम से पारिवारिक संबंधों एवं जीवन शैली को बेहतर बनाया जा सकता है।

साध्वी भावनाश्रीजी ने बताया कि पुरानी बहनें घर का कार्य करते हुए श्वास प्रेक्षा कर लेती थीं। साध्वी दीप्तियशाजी ने कायोत्सर्ग के आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक लाभ बताते हुए कहा कि कायोत्सर्ग में शरीर के प्रत्येक अवयव पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। कायोत्सर्ग के द्वारा शरीर में ऊर्जा का संचार होता है।

शरीर रिलैक्स होता है, जिससे शांति का अनुभव होता है। दीर्घ श्वास लेने से शरीर में ऑक्सीजन का स्तर बढ़ता है इससे शरीर के दूषित पदार्थ निकलते हैं, मानसिक शांति मिलती है और एकाग्रता बढ़ती है। प्रेक्षाध्यान कार्यशाला में 53 भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

आभार ज्ञापन तेममं मंत्री रंजना तलेसरा ने किया।

कैंसर अवेयरनेस पर टॉक शॉ का आयोजन

राजसमन्द।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल राजनगर द्वारा स्वस्थ परिवार स्वस्थ समाज के अन्तर्गत Cancer Awareness Program Walkathon एवं Talkshow का आयोजन भिक्षु बोधि स्थल में साध्वी मंजूयशा जी ठाणा-4 के सान्निध्य में किया गया। प्रथम चरण में स्थानीय महिला मण्डल की बहनों द्वारा Walkathon भिक्षु बोधि स्थल से लेकर राजनगर बस स्टैण्ड और वापस भिक्षु बोधि स्थल में पूरी हुई। दूसरे चरण में कार्यशाला का आयोजन भिक्षु बोधि स्थल में आयोजित किया गया। कार्यशाला की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से की गई। महिला मण्डल की बहनों ने प्रेरणा गीत द्वारा मंगलाचरण किया। तत्पश्चात् महिला मंडल अध्यक्षा सुधा कोठारी ने सभी पदाधिकारियों एवं नाथद्वारा से समागत कैंसर स्पेशलिस्ट डॉ. प्रियांक तलेसरा का स्वागत एवं अभिनंदन किया।

डॉ. प्रियांक तलेसरा ने कैंसर के लक्षण एवं उपचारों के बारे में बताया और कहा कि शुरुआती पहचान अधिक सफल उपचार प्रभावित अंग के आधार पर किया जा सकता है। अलग-अलग कैंसर के अलग-अलग लक्षण होते हैं। उन्होंने बताया कि शारीरिक रूप से हमे संतुलित आहार लेना चाहिए और स्वस्थ जीवन शैली का पालन करना चाहिए।

डॉ. तलेसरा ने बताया कि यह शरीर किराए का है, हमने शरीर का ध्यान नहीं रखा तो यह हमारी काया को कष्ट देगा। 24 घंटों में से कम से कम 2 घंटे हमे अपने लिये ज़रूर निकालने चाहिए जिसमें योग और प्राणायाम, आसन आदि करने चाहिए। उन्होंने बताया कि दिमाग़ हमारे शरीर पर क़ाबू रखता है इसलिए सबसे पहले दिमाग़ को स्वस्थ रखना चाहिए। भिक्षु बोधि स्थल अध्यक्ष हर्षलाल नवलखा ने भी इस कार्यशाला पर अपने विचार रखे और डॉ. तलेसरा का सभा की ओर से अभिनंदन किया।

साध्वी मंजूयशा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जो व्यक्ति संतुलित जीवन जीता है वह स्वस्थ रहता है। कार्यशाला में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्या डॉ. नीना कावड़िया की भी उपस्तिथि रही। कार्यशाला का संचालन महिला मंडल मंत्री चेष्टा धोका ने किया। आभार ज्ञापन अनामिका सहलोत द्वारा किया गया। अंत में टॉक शॉ के माध्यम से बहनों ने डॉ. तलेसरा से अपनी जिज्ञासा साझा की।

श्रमण आरोग्य संवर्द्धन शिविर का आयोजन

जयपुर।

तेरापंथ युवक परिषद् ट्रस्ट जयपुर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेन्टर द्वारा जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गनाइजेशन (JITO) जयपुर चैप्टर के संयुक्त तत्वावधान में 'श्रमण आरोग्य संवर्द्धन' शिविर का आयोजन महावीर साधना केंद्र जवाहर नगर जयपुर में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य विश्वरतन सागर सूरीश्वर जी के सान्निध्य में हुआ। ATDC के माध्यम से विराजित चारित्रात्माओं की चिकित्सीय स्वास्थ्य जाँच विशेषज्ञ डॉ. रविंद्र मेहता, डॉ. अमित बैंगानी, डॉ. प्रदीप जैन के द्वारा की गई। तेरापंथ युवक परिषद् ट्रस्ट जयपुर के चेयरमैन गौतम बरड़िया ने बताया कि ATDC एवं JITO द्वारा सभी जैन साधु संतो की निःशुल्क चिकित्सा जांच की व्यवस्था करवायी जायेगी। JITO जयपुर चैप्टर के मुख्य सचिव हितेष भांडिया ने कहा कि यह शिविर आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेन्टर जयपुर के माध्यम से साधु-संतों की स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देने और सेवा के उद्देश्य से आयोजित किया गया है। कार्यक्रम में JITO जयपुर चैप्टर के पूर्व मुख्य सचिव राजीव पालवात, सचिव अजय कुमार जैन, डायरेक्टर गौरव जैन मंडोत आदि गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। शिविर के सफल आयोजन में हितेश भांडिया एवं श्रेयांश बैंगानी का योगदान रहा।

स्नेह मिलन एवं ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव का आयोजन

हुब्बली, (कर्नाटक)।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा हुबली के तत्वावधान में 17वां स्नेह मिलन एवं ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव तेरापंथ समाज की ओर से शहर के एस एस के कल्याण मंडप केशवापुर में आयोजित किया गया।

ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा बहुत सुंदर प्रस्तुति दी गई। समाज के 70 वर्ष के ऊपर के बुजुर्गों का सम्मान किया गया। 90% से अधिक अंक लाने वाले छात्र-छात्राओं को प्रमाण पत्र देकर समाज के वरिष्ठ श्रावकों द्वारा सम्मानित किया गया।

नई बहुओं का भी सम्मान किया गया। कार्यक्रम के संजोयक महेंद्र वेदमूथा, सह संयोजक केशरीचंद गोलछा रहे। समारोह का संचालन संतोष वेदमूथा एवं विकाश वेदमूथा द्वारा किया गया। सम्मेलन के प्रायोजक बायतु निवासी हुब्बली प्रवासी राकेश कुमार, दिनेश कुमार, मुकेश कुमार बागचार परिवार का सम्मान समाज के गणमान्य व्यक्तियों के द्वारा किया गया।

विशेष अतिथि के रूप में सौदत्ती से श्रद्धानिष्ठ श्रावक बाबूलाल जिरावला एवं सौदत्ती सभाध्यक्ष जगदीश कोठारी, मरुधर संघ के सम्मानित ट्रस्टीगण, स्थानकवासी समाज के गणमान्य पदाधिकारी, दिगंबर जैन समाज के ट्रस्टीगण, सिवांची समाज के ट्रस्टीगण, युवक परिषद के अध्यक्ष विशाल बोहरा एवं तेरापंथ समाज व जैन समाज के गणमान्य व्यक्ति समारोह में विशेष रूप से उपस्थित रहे।

भोजन व्यवस्था में प्रभारी इंद्रचंद संकलेचा, ओम प्रकाश कटारिया एवं दलीचंद कोठारी का, वाहन व्यवस्था में संकेत वडेरा व पुनीत जिरावला का सहयोग रहा। तेयुप अध्यक्ष विशाल बोहरा के नेतृत्व में तेरापंथ युवक परिषद की संपूर्ण टीम का अच्छा सहयोग प्राप्त हुआ।

महिला मंडल एवं कन्या मंडल का कार्यक्रम में विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। वर्ष 2025 के दीपावली स्नेह मिलन के प्रायोजक अमराव सिंह बैंद एवं 2026 के प्रायोजक शंकरलाल वेदमूथा परिवार को समाज के गणमान्य व्यक्तियों द्वारा सम्मानित किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
16 दिसम्बर- 22 दिसम्बर, 2024

मुनिश्री विजयराज के प्रति चारित्रात्माओं के उद्गार

मुनिश्री विजयराज जी स्वामी राजगढ़ के मुसरफ परिवार से संबद्ध थे। तेरापंथ धर्म संघ में उनकी अपनी पहचान थी। उनका शारीरिक सौष्ठव तथा गौरवर्ण विदेशी स्वरूप के साथ जुड़े होने से हम सन्त समाज में वे अन्तर्राष्ट्रीय के रूप में पहचाने जाते थे। वे संयम साधना की आराधना के साथ स्कूलों में जीवन विज्ञान से जुड़े प्रयोगों से विद्यार्थियों में प्रवचन के माध्यम से संस्कार भरने में विशेष रूचि रखते थे। इस कार्य का मूल्यांकन करते हुए आचार्य श्री महाश्रमण जी ने उन्हें 'जीवन विज्ञान महासंप्रसारक' सम्बोधन से संबोधित किया।

मुनिश्री की एक और विशेषता थी कि वे प्रत्येक साधु-सन्त अथवा गृहस्थ के किसी विशेष अवसर पर दोहे, छन्द बनाकर तत्काल दे देते थे। उनके द्वारा लिखित गीत, कहानियां आदि भी प्रकाशित हुए। वे सरल स्वभाव के सौम्य सन्त थे। मुनिवर का जीवन सहज व्यावहारिक था। उनके सहयोगी मुनि निर्मल कुमार जी भी पारिवारिक रिश्तों से युक्त थे।

'शासनश्री' मुनि सुखलाल जी स्वामी के साझ में भी मर्यादा महोत्सव आदि अवसर पर भी उन्हें साथ रहने का अवसर मिला। मुनिश्री विजयराज जी की अग्रिम भव यात्रा सिद्धत्व की ओर गतिमान हो। मंगलकामना।

– मुनि मोहजीतकुमार (राजगढ़)

संक्षिप्त खबर

संस्कार शाला का सातवां चरण

राजराजेश्वरी नगर। अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल राजराजेश्वरी नगर द्वारा पट्टनगेरे सरकारी स्कूल में Way of Happines संस्कार शाला का सातवां चरण मनाया गया। सत्य और ईमानदारी विषय पर अध्यक्ष सुमन पटावरी निर्देशन में आयोजित इस कार्यशाला में नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ कार्यशाला का प्रारंभ वंदना भंसाली ने किया। महाप्राण ध्वनि का प्रयोग पूनम दुग्गड ने करवाया। बच्चों को सत्य और ईमानदारी पर आधारित एक कहानी सुनाई गई और बच्चों ने उसी कहानी की रोचक नाट्य प्रस्तुती दी। उत्साहवर्धन के लिये सभी बच्चों को पुरस्कृत किया गया। Positive Affirmations के साथ कार्यशाला को सम्पूर्ण किया गया। संयोजिका पूनम दक का पूर्ण सहयोग रहा। कार्यक्रम में मंत्री पदमा महेर एवं अन्य पदाधिकारी तथा सदस्य बहनें उपस्थित थी।

संस्कारशाला का किया गया आयोजन

कांटाबाजी। अभातेममं के निर्देशन में तेममं कांटाबाजी द्वारा संस्कारशाला के अंतर्गत स्थानीय एम. ई. स्कूल में माता-पिता एवं बड़ों का सम्मान विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

बच्चों के बीच ड्राइंग कंपीटीशन रखा गया जिसमें 15 बच्चों ने भाग लिया। विजेता बच्चों को बिंदिया जैन द्वारा पुरस्कृत किया गया। महिला मंडल की अध्यक्षा आशा जैन ने बच्चों को संबोधित किया। ममता जैन ने बच्चों को 'संस्कार एवं बड़ों का आदर' विषय पर कहानी सुनाई।

रक्तदान शिविर का आयोजन

उत्तर-कोलकाता। अभातेयुप के तत्वाधान में तेरापंथ युवक परिषद्, उत्तर-कोलकाता द्वारा बोरकर पैकेजिंग में आयोजित रक्तदान शिविर में 23 यूनिट एवं आरडीबी ग्रुप के रीजेंट इंटरनेशनल हार्ट में आयोजित रक्तदान शिविर में 28 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। शिविर में तेयुप पदाधिकारीगण एवं कार्यकारिणी सदस्यों की सक्रिय उपस्थिति रही। पीपल्स ब्लड बैंक ने अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। बोरकर पैकेजिंग में निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का भी आयोजन किया गया जिसमें 74 व्यक्तियों ने अपनी नेत्र जांच करवाई।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं डेंटल केयर का उद्घाटन समारोह

राजराजेश्वरीनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ को परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद राजराजेश्वरीनगर द्वारा केंगेरी में नए आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं डेंटल केयर का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से किया गया। उद्घाटनकर्ता सायर हीरालाल मालू परिवार, डेंटल चेयर प्रायोजक कमलेश, भरत डूंगरवाल, राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा एवं उनकी पूरी टीम की उपस्थिति में सामूहिक नवकार मंत्र का स्मरण कर एटीडीसी का उद्घाटन हुआ।

संस्कारक दिनेश मरोठी एवं विकास बांठिया द्वारा विधि विधान से कार्यक्रम को संपन्न करवाया गया। अध्यक्ष बिकाश छाजेड़ ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है कि सभी के सहयोग से आज यह दूसरी एटीडीसी खोलने का सपना साकार हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने युवक परिषद को शुभकामनाएं दी और कहा कि बहुत ही सुंदर एवं व्यवस्थित रूप से इस एटीडीसी का निर्माण किया गया है। इसके भीतर प्रवेश करते ही सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पवन मांडोत एवं महामंत्री अमित नाहटा ने भी शुभकामनाएं दी। मुख्य अतिथि अभातेयुप अभूतपूर्वक अध्यक्ष विमल कटारिया ने भी अपने विचार रखे। उद्घाटनकर्ता सायर हीरालाल मालू एवं डेंटल चेयर प्रायोजक कमलेश भरत डूंगरवाल ने शुभकामना संप्रेषित की।

संस्थापक अध्यक्ष राजेश भंसाली ने अपने विचार रखते हुए कहा कि एटीडीसी की सफलता में स्टाफ और डॉक्टर्स का बहुत सहयोग रहा है। एटीडीसी प्रभारी नरेश बांठिया ने कहा कि इस एटीडीसी को बनाने में सभी ने मिलकर बहुत मेहनत की। इंटीरियर डिजाइनर पूनम दुगड़ ने भी बहुत अच्छा काम किया है।

इस अवसर पर अभातेयुप साथीगण, आर आर नगर सभा अध्यक्ष राकेश छाजेड़, महिला मंडल अध्यक्षा सुमन पटावरी, टीपीएफ़ राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मंडोत, संघीय संस्थाओं के अध्यक्ष मंत्री, आर आर नगर पदाधिकारीगण, प्रभुद विचारक, परामर्शक गण, कार्यकारिणी सदस्य, डॉक्टर्स, स्टाफ सहित समाज जन उपस्थित थे। कार्यक्रम का सफल संचालन मंत्री सुपार्श पटावरी ने किया।

दम्पति शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन

बेंगलुरु।

साध्वी उदितयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद बेंगलुरु द्वारा "दम्पति शिविर" का आयोजन तेरापंथ सभा भवन, गांधीनगर में सफलतापूर्वक किया गया। इस शिविर में विभिन्न उम्र के 32 विवाहित जोड़ों सहित कुल 110 लोगों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। शिविर का शुभारंभ साध्वी उदितयशा जी द्वारा मंत्रोच्चार से हुआ।

प्रथम चरण में साध्वीश्री ने 'अध्यात्म के रंग, परिवार के संग' विषय पर विस्तार से चर्चा की और परिवार के संविधान पर अपने विचार साझा किए। परिवार में सुदृढ़ संबंध, अनुशासन और शांति बनाए रखने के लिए इस संविधान के पालन पर जोर दिया। द्वितीय चरण में साध्वी संगीतप्रभा जी ने 'I Just Want Your Attention' के अंतर्गत प्रश्नोत्तरी का सत्र रखा गया। इसमें जोड़ों को अपने रिश्तों को नई ऊर्जा और दिशा देने के लिए प्रेरित किया गया। तृतीय चरण में साध्वी भव्ययशा जी ने 18 पापों की अनुप्रेक्षा करवाई, जिससे आत्म-चिंतन और आत्म-परिष्कार का अवसर मिला। चतुर्थ चरण में 'Test Your Talent - Fire Together, Wire Together' के माध्यम से पति-पत्नी के बीच सौहार्द, समन्वय और सामंजस्य स्थापित करने की प्रेरणा दी गई। इसके अतिरिक्त, साध्वी भव्ययशा जी और साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने एक गीतिका का संगान किया। जिज्ञासा समाधान सत्र में साध्वीश्री ने प्रतिभागियों के सवालों का समुचित समाधान किया। शिविर के दौरान ऑर्थोपेडिक विशेषज्ञ, डॉ. प्रशांत जैन का सम्मान तेरापंथ सभा द्वारा किया गया। जीतो के अध्यक्ष, विमल कटारिया ने जीतो की गतिविधियों और योजनाओं की जानकारी दी।

इस आयोजन में तेरापंथ सभा के अध्यक्ष पारसमल भंसाली, मंत्री विनोद छाजेड़, तेयुप अध्यक्ष विमल धारीवाल, महिला मंडल की अध्यक्षा रिजु डुंगरवाल और अन्य गणमान्य भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी संगीतप्रभा जी ने किया और आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री राकेश चोरड़िया द्वारा किया गया।

जैन विद्या की परीक्षा आयोजित

मदुरै। जैन विश्व भारती के समण संस्कृति संकाय के अंतर्गत जैन विद्या परीक्षा का आयोजन श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा मदुरै तत्वावधान में स्थानीय तेरापंथ भवन में हुआ। केंद्रीय व्यवस्थापक नेहा दुधेड़िया, तेरापंथ सभा अध्यक्ष गौतम चंद गोलेछा एवं मंत्री अभिषेक कोठारी ने सभी के समक्ष प्रश्न पत्र का लिफाफा खोला।

संक्षिप्त खबर

संस्कार निर्माण कार्यशाला का हुआ आयोजन

हैदराबाद। समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद ने "टैगोर होम स्कूल" में संस्कारशाला का आयोजन कर स्कूल को एक कंप्यूटर एवं प्रिंटर भेंट किया। प्रथम सत्र में सरला भुतोडिया ने हेल्दी फूड हैबिट के बारे में बच्चों को विस्तार से बताया। द्वितीय सत्र में कन्या मंडल से रितु धोका ने 'सोशल मीडिया का सही उपयोग' विषय पर विचार व्यक्त किए। कन्या मंडल से सुरभि बोथरा ने बच्चों को ध्यान का प्रयोग करवाया। साक्षी सुराणा, तनीषा सुराणा एवं सिद्धी पोकरना ने बच्चों को रोचक ज्ञानवर्धक गेम्स खिलाए। प्रिंसिपल ने धन्यवाद देते हुए मंडल के कार्य की सराहना की। स्वस्थ समाज के अंतर्गत कैंसर अवेयरनेस प्रोग्राम के रूप में स्कूल के शिक्षिकाओं एवं स्टाफ को गीतिका के माध्यम से कैंसर की रोकथाम के बारे में बताया गया।

चातुर्मासिक मंगल विहार आयोजित

पालघर। महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी डॉ. पीयूषप्रभा जी ने चातुर्मास की परिसम्पन्नता राजा प्रदेशी का व्याख्यान देकर तेरापंथ भवन से मंगल विहार किया। मंगल विहार में बड़ी संख्या में श्रद्धालु सम्मिलित हुए। महिला मंडल, किशोर मंडल, तेरापंथ युवक परिषद्, सभा और अणुव्रत समिति आदि के पदाधिकारी, सदस्य आदि गणवेश में जयघोष करते हुए नयनाभिराम दृश्य उपस्थित कर रहे थे। मंगल विहार रैली शहर के मुख्य मार्गो से होते हुए बाफना सेनटोरियम MIDC गेट के सामने, बोईसर रोड स्थल पर पहुंचकर समारोह रूप में परिवर्तित हो गई।

रक्तदान शिविर का आयोजन

जयपुर। तेरापंथ युवक परिषद् जयपुर द्वारा नेशनल इलेक्ट्रिक इक्विपमेंटस कॉरपोरेशन के सौजन्य से रक्तदान शिविर का आयोजन सरना डूंगर इंडस्ट्रीज एरिया, जयपुर में किया गया। शिविर में कुल 86 यूनिट रक्त का संग्रहण भगवान महावीर कैंसर हॉस्पीटल ब्लड बैंक एवं शेखावटी ब्लड सेन्टर द्वारा किया गया। कंपनी के डायरेक्टर राजेश, सौरभ पटावरी परिवार का स्वागत तेयुप जयपुर द्वारा किया गया। तेयुप जयपुर के परामर्शक राजेश पटावरी ने 59वीं बार और उपाध्यक्ष प्रवीण जैन तथा कार्यसमिति सदस्य सौरभ पटावरी ने रक्तदान कर प्रेरणा प्रदान की। शिविर में तेयुप जयपुर के अध्यक्ष गौतम बरड़िया, पदाधिकारी, कार्यसमिति सदस्य एवं सदस्यों ने रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम की कुशल संयोजना में मुख्य संयोजक करण नाहटा, संयोजक रवि छाजेड़, रोहित बोथरा, सौरभ पटावरी का श्रम उल्लेखनीय रहा।

आओ संवारे बच्चों का कल

हैदराबाद। तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद के तत्वावधान में तेरापंथ कन्या मंडल हैदराबाद द्वारा 'आओ संवारे बच्चों का कल' के अंतर्गत बचपन प्ले स्कूल में कार्यशाला का आयोजन किया गया। महिला मंडल की बहनों ने Health and Hygiene के बारे में बच्चों को समझाया। कन्यामण्डल की सह-प्रभारी रेखा संकलेचा ने अपने विचार व्यक्त किए। सह–संयोजिका सुरभि बोथरा द्वारा प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया गया। कन्यामण्डल सह–संयोजिका रितु धोका ने बच्चों को Social Media - Better Implementation के बारे में समझाया। कन्या मंडल सदस्या साक्षी सुराणा, तनीषा सुराणा एवं सिद्धि जैन ने बच्चों को खेल-खेल में कई प्रश्न पूछे गए सही उत्तर देने वाले को उपहार दिया गया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ **इस्लामपुर।** चाड़वास निवासी इस्लामपुर प्रवासी स्व. हनुमानमल दुगड के पौत्र एवं अजय-श्वेता दुगड के सुपुत्र के नामकरण संस्कार कार्यक्रम का आयोजन जैन संस्कार विधि से तेरापंथ भवन में करवाया गया। इस कार्यक्रम में संस्कारक प्रमोद सिंघी ने निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को संपादित किया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **गंगाशहर।** गुलाब देवी-अभय कुमार बच्छावत के नूतन गृहप्रवेश का मंगल शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा 'जैन संस्कारक' रोहित बैद और देवेन्द्र डागा ने विधि विधान पूर्वक मांगलिक मंत्रोचार के साथ सम्पन्न करवाया।

■ **साउथ कोलकाता।** सरदारशहर निवासी-साउथ कोलकाता प्रवासी श्रीचन्द मुदित दूगड़ का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से जैन संस्कारक महेंद्र दुगड़ ने पूरे मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न करवाया।

■ **राजराजेश्वरीनगर।** सुशील प्रणत भादानी का नूतन गृह प्रवेश का जैन संस्कार विधि से संस्कारक दिनेश मरोठी ने पूर्ण विधि विधान से मंत्रोच्चार कर संपादित करवाया।

मंगल भावना समारोह में उमड़ा जनसैलाब

अमराईवाड़ी।

साध्वी काव्यलता जी के अमराईवाड़ी चातुर्मास की संपन्नता पर मंगल भावना समारोह का आयोजन सिंघवी भवन, अमराईवाड़ी में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र के द्वारा की। मंगलाचरण महिला मंडल ने किया।

स्वागत वक्तव्य सभा अध्यक्ष नवरत्न चीप्पड़ एवं मंत्री निर्मल ओस्तवाल ने किया। तेयुप अध्यक्ष मुकेश सिंघवी ने अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए साध्वी श्री के प्रति कृतज्ञता एवं तेयुप की समस्त टीम की ओर से साध्वीश्री के प्रति क्षमा याचना भी की।

महिला मंडल अध्यक्ष लक्ष्मी सिसोदिया, अणुव्रत समिति से संगीता सिंघवी, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम से रितिका गेलड़ा, ज्ञानशाला से कोमल हिरण, आदि अनेकों पदाधिकारियों एवं श्रावक-श्राविकाओं ने अपनी मंगल भावनाएं व्यक्त की। यंग लीडर न्यूज़पेपर के संपादक धर्मेन्द्र जैन ने अपने विचार व्यक्त किए।

साध्वी ज्योतियशाजी, साध्वी सुरभिप्रभाजी, साध्वी राहतप्रभाजी ने अमराईवाड़ी को समर्पित एक सुंदर गीतिका का संगान किया। साध्वी ज्योतियशाजी ने साध्वी मधुस्मिताजी द्वारा प्राप्त संदेश का वाचन किया।

साध्वी काव्यलताजी ने अपने उद्बोधन में कहा- अमराईवाड़ी में हमारा चातुर्मास प्रत्येक रूप से साताकारी रहा। यहां के श्रावकगण धर्मसंघ के प्रति समर्पित हैं। यह क्षेत्र छोटा होते हुए भी बड़े क्षेत्र के मुकाबले कम नही है। यहां की युवक परिषद, सभा, महिला मंडल ने तप, जप, कार्यशाला आदि व्यवस्थित रूप से सम्पादित किए। कार्यक्रम के प्रायोजक चंदनमल ओस्तवाल का स्थानीय सभा संस्था द्वारा सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन तेयुप कोषाध्यक्ष दीनेश टुकलिया ने एवं कुशल संचालन तेयुप सदस्य रवि चंडालिया ने किया।

चातुर्मास सम्पन्नता के अवसर पर साध्वी काव्यलताजी ने राजा प्रदेशी के प्रवचन के माध्यम से प्रेरणा देते हुए कहा कि आप सभी के द्वारा यहां जो धर्म की गंगा बहाई गई है वह निरन्तर बहती रहे। गुरुदेव अमराईवाड़ी समाज पर हमेशा कृपा बरसाते हुवे प्रत्येक वर्ष चातुर्मास प्रदान करें।

साध्वी श्री ने चारों साध्वियों की ओर से सभी से क्षमा याचना की। प्रवचन पश्चात रैली के माध्यम से साध्वी श्री विहार कर सिंघवी भवन से कैलाश बाफना के निवास स्थान पधारे। रैली में सभा, युवक परिषद, महिला मंडल के अनेक सदस्यों की सहभागिता रही।

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'आईना रिश्तों का'

अमराईवाड़ी ओढव।

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद अमराईवाड़ी-ओढव द्वारा साध्वी काव्यलता जी के सान्निध्य में व्यक्तित्व विकास कार्यशाला - 'आईना रिश्तों का' का आयोजन सिंघवी भवन, अमराईवाड़ी में किया गया।

नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। स्वागत वक्तव्य तेयुप अध्यक्ष मुकेश सिंघवी ने दिया। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता सीपीएस जोनल ट्रेनर सुरभि शाह ने रिश्तों की महत्ता को समझाया। उन्होंने कहा कि माता-पिता हमारे आधार स्तंभ हैं, उन्हें तीर्थ स्थान के समान समझें।

भाई-बहन का रिश्ता बहुत ही महत्वपूर्ण और सुख-दुख में साथ देने वाला रिश्ता है। तीसरा महत्वपूर्ण रिश्ता है पति-पत्नी का। पति-पत्नी एक दूसरे पर विश्वास रखें। मौन के पीछे की भाषा को समझें, हंसी के पीछे का दर्द समझें एवं एक-दूसरे पर विश्वास जताते हुए निरंतर आगे बढ़ें।

साध्वी काव्यलताजी ने कहा कि यह कार्यशाला बहुत ही सुंदर रही। यहां पधारे हुए समस्त परिवार जनों को पारिवारिक रिश्तों के बारे में बहुत ही मार्मिक बातें समझाई गई हैं, वे उन बातों को अपने जीवन में जरूर उतारें एवं अपने रिश्तों को मजबूती प्रदान करें। मुख्य वक्ता सुरभि शाह को परिषद् द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन आकाश शाह एवं जयेश सिंघवी ने किया।

आभार ज्ञापन तेरापंथ युवक परिषद के मंत्री सुनील चीप्पड़ ने किया। लगभग 25 परिवारों के सदस्यों ने इस कार्यशाला में भाग लेकर कार्यशाला को सफल बनाया। कार्यक्रम में शाखा प्रभारी कुलदीप नवलखा एवं अभातेयुप सदस्य अपूर्व मोदी की भी उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
16 दिसम्बर- 22 दिसम्बर, 2024

संबोधि

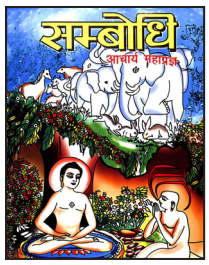

गृहिधर्मचर्या

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

जीसस ने कहा है-'कोई दो स्वामियों की सेवा एक साथ नहीं कर सकता। चाहे ईश्वर की आराधना करो या कुबेर की। ईश्वर चाहता है-त्याग और समर्पण, और कुबेर चाहता है-संग्रह तथा शोषण।' एक और भी उनका महत्त्वपूर्ण वचन है-'मैं तुम्हारा भगवान् बड़ा मानी हूं। मैं किसी दूसरे की सत्ता को नहीं सह सकता। चाहे तुम मुझे प्रसन्न कर लो या शैतान को।' धर्म की ज्योति प्रज्वलित होने के बाद भेदों की दीवार खड़ी नहीं रह सकती। धुएं की दीवार के लिए तेज हवा का झोंका पर्याप्त है। मायाजन्य मान्यताएं-मैं बड़ा हूं, विद्वान हूं, पूज्य हैं, उच्च हूं-आदि ज्ञान के प्रकाश में कब तक टिक सकती है? व्यक्ति दूसरों को तुच्छ और घृणित तब तक ही समझता है जब तक उसे स्वयं का बोध नहीं है। मंसूर एक महान् सूफी साधक हुआ है। उसने कहा-'अगर परमात्मा भी मुझे मिल जाय तो क्षमा नहीं मांगनी पड़ेगी, क्योंकि उसके सिवा मैंने किसी में कुछ देखा ही नहीं।' जो सबमें आत्मा को देखने लगता है वह कैसे दूसरों का तिरस्कार कर सकेगा? आत्म-बुद्धि जागृत हो जाए तब द्वैत का प्रश्न नहीं उठता। किन्तु उससे पूर्व भी यदि धार्मिक व्यक्ति दूसरों में आत्मा-परमात्मा को देखने लगे तो अनेक आंतरिक और बाह्य समस्याएं तिरोहित हो सकती है और वह व्यर्थ के क्षुद्रतम पापों से निवृत्त रह सकता है।

२०. नात्मा शब्दो न गन्धोऽसौ, रूपं स्पर्शो न वा रसः।
न वर्तुलो न वा त्र्यसः, सत्ताऽरूपवती ह्यसौ॥

आत्मा न शब्द है, न गंध है, न रूप है, न स्पर्श है, न रस है, न वर्तुल-गोलाकार है और न त्रिकोण है। वह अमूर्त सत्ता है।

वृहदारण्य उपनिषद् में जनक याज्ञवल्क्य से पूछता है कि आत्मा क्या है? याज्ञवल्क्य ने कहा-जो वह विज्ञान स्वरूप और ज्योतिर्मय है वह आत्मा है। यह आत्मा के शुद्ध स्वरूप का निरूपण है। क्या आत्मा के शरीर, वाणी, मन, बुद्धि, आंख, नाक, कान, हाथ, पैर, मुंह, आदि है? इनके उत्तर में हम वेदों में 'नेति' पाते हैं। ये आत्मा नहीं हैं। इनसे आत्मा का बोध होता है।

आत्मा अमूर्त है। शरीर, इन्द्रिय इत्यादि मूर्त हैं। मूर्त वस्तु अमूर्त को ग्रहण नहीं कर सकती। आकार प्रत्याकार पौद्गलिक वस्तुओं के होता है, चेतन में नहीं। आत्मा की खोज आत्मा से ही होती है। प्रश्नोपनिषद् में कहा है-'तप, ब्रह्मचर्य, श्रद्धा और विद्या से आत्मा की खोज करो।'

शब्दों का प्रयोग करने वाला, गंध का अनुभव करने वाला, स्पर्श और रस की अनुभूति करने वाला आत्मा है। शरीर की लंबी-चौड़ी रचना में आत्मा का योग है। जड़ शरीर में संवर्धन की शक्ति नहीं है। आत्मा अक्षुण्ण है। उसमें घटने और बढ़ने की क्रिया नहीं होती। (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्य भिक्षु युग

साध्वीश्री कस्तूजी (पीपाड) दीक्षा क्रमांक 47

साध्वीश्री बड़ी विनयवती, वैराग्यवती और तपस्विनी थी। आपने अपने 19 वर्ष के संयम पर्याय में प्रतिवर्ष दो माह एकांतर करती। आपने उपवास, बेले, तेले आदि बहुत बार किये। चोले से लेकर 17 दिन की तपस्या तक के थोकडे किये। अन्त में सवा प्रहर के सागारी अनशन से स्वर्ग प्रस्थान किया।

– साभार: शासन समुद्र –

श्रमण महावीर

नारी का बन्ध–विमोचन

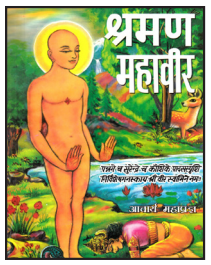

काकमुख की बातें सुन महारानी का सुकुमार मन उद्वेलित हो गया। उसके हृदय पर तीव्र आघात लगा। वह मूर्छित हो गई। वसुमती ने अपनी मां को सचेत करने का प्रयत्न किया। पर उसकी मूर्च्छा नहीं टूटी। उसके हृदय की गति व्यथा को रोकने में अक्षम होकर स्वयं रुक गई। काकमुख ने महारानी का अपहरण किया और उसकी वाणी ने महारानी के प्राणों का अपहरण कर लिया। अब शेष रह गया, उसका निष्प्राण और निस्पन्द शरीर।

महारानी के महाप्रयाण ने काकमुख का हृदय बदल दिया। उसकी आखें खुल गई। उसका मानवीय रूप जाग उठा। उसने अपने कार्य के प्रति सोचा। उसे लगा, जैसे महारानी का अपहरण करते समय वह उन्माद में धुत्त था। प्रत्येक आवेश मनुष्य को धुत्त कर देता है। अब उन्माद के उतर जाने पर उसे अपनी और अपने साथियों की चेष्टा की व्यर्थता का अनुभव हो रहा है। उन्माद की समाप्ति पर हर आदमी ऐसा ही अनुभव करता है। पर जो होना होता है, वह तो उन्माद की छाया में हो जाता है, फिर मूर्च्छा-भंग घटित घटना को पाप-प्रक्षालन कैसे कर सकता है?

काकमुख का दायां हाथ पाप के रक्त से रंजित हो गया। उसका बायां हाथ अभी बच रहा था। वह उसके रक्त–रंजित होने की आशंका से भयभीत हो उठा। उसने वसुमती के सामने अपनी अधमता को उघाड़कर रख दिया। उसकी अश्रुपूरित आखों में क्षमा की मांग सजीव हो उठी। हताश काकमुख व्यथित वसुमती को साथ लिए कौशाम्बी पहुंच गया।

वह युग मनुष्य के विक्रय का युग था। आज हमें पशु-विक्रय स्वाभाविक लगता है। उस युग में मनुष्य-विक्रय इतना ही स्वाभाविक था। बिका हुआ मनुष्य दास बन जाता और वह खरीददार की चल-संपत्ति हो जाता। उस युग में मनुष्य का मूल्य आज जितना नहीं था। आज का मनुष्य पशु की श्रेणी से ऊंचा उठ गया है। इस आरोहण में दीर्घ तपस्वी महावीर की तपस्या का योग कम नहीं है।

काकमुख वसुमती को लेकर मनुष्य विक्रय के बाजार में उपस्थित हो गया। बाजार में बड़ी चहल-पहल है। सैकड़ों आदमी बिकने के लिए खड़े हैं। विक्रेताओं और क्रेताओं के बीच बोलियां लग रही हैं।

वसुमती राजकन्या थी। उसका रूप लावण्य मुस्करा रहा था। यौवन उभार की दहलीज पर पैर रखे खड़ा था। इतनी रूपसी और शालीन कन्या की बिक्री! सारा बाजार स्तब्ध रह गया।

हर ग्राहक ने वसुमती को खरीदना चाहा। पर उसका मोल इतना अधिक था कि उसे कोई खरीद नहीं सका।

उस समय श्रेष्ठी धनावह उधर से जा रहा था। उसने वसुमती को देखा। वह अवाक् रह गया। उसे कन्या की कुलगरिमा और वर्तमान की दयनीय परिस्थिति-दोनों की कल्पना हो गई। उसका हृदय करुणा से भर गया। वह भारी कीमत चुकाकर कन्या को अपने घर ले आया।

श्रेष्ठी ने मृदु स्वर में कहा, 'पुत्री! मैं तुम्हारा परिचय जानना चाहता हूं।' वसुमती की मुद्रा गंभीर हो गई। वह कुछ नहीं बोली। श्रेष्ठी ने फिर अपनी बात दोहराई। वसुमती फिर मौन रही। उसने तीसरी बार फिर पूछा, तब वसुमती ने इतना ही कहा, 'मैं आपकी दासी हूं। इससे अधिक मेरा परिचय कुछ नहीं है।' उसकी आखों से अश्रुधारा वह चली। श्रेष्ठी का दिल पसीज गया। उसने बात का सिलसिला तोड़ दिया।

श्रेष्ठी धनावह की पत्नी का नाम था मूला। वह वसुमती को देख आश्चर्य में पड़ गई। धनावह ने उससे कहा, 'तुम्हारे लिए पुत्री लाया हूं। इसका ध्यान रखना।' (क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

अदत्ताग्रहणम् अस्तेयम्

शान्त रस अतीन्द्रिय सुख होता है। उसकी प्रकृति वैषयिक सुखों से भिन्न प्रकार की है। वह स्थायी व सदा सुखदायी होता है। अतीन्द्रिय सुख को पाने के लिए वैषयिक सुखों से विरत होना, अनासक्त होना अनिवार्य होता है।

ऐन्द्रियक सुखों में प्रमुख स्थान अब्रह्मचर्य का है। शाश्वत सुखों के अभीप्सु व्यक्ति के लिए इससे विरत होना अनिवार्य है। अध्यात्म के लिए समर्पित व्यक्तियों (साधुओं) के लिए तो ब्रह्मचर्य को पूर्णतया आराधना आवश्यक है। वह साधुत्व का केन्द्रीय तत्त्व है। संन्यस्त जीवन जीने वालों के लिए कंचन (धन) और कामिनी (स्त्री) से विरत रहना मौलिक आचारसंहिता है।

गृहीत मौलिक व्रत की सुरक्षा के लिए अपेक्षित होने पर प्राणत्याग भी उपादेय माना गया है। पौरुष के प्रेरक पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के गीत की एक पक्ति मननीय है–

'प्राणों की परवाह नहीं है, प्रण को अटल निभाएंगे।'

ब्रह्मचर्य खतरे में पड़ जाए तो उसकी सुरक्षा के लिए आवश्यक प्रतीत होने पर यथाविधि मरण का वरण भी मुनि के लिए आगम विहित है। मुनि के लिए जीवन और मृत्यु गौण है, उसके लिए संयम अथवा स्वीकृत मौलिक व्रतों की आराधना मुख्य बात है। जीवन तो अनंत बार मिल गया। उसकी क्या मूल्यवत्ता है? मूल्यवत्ता चारित्र की आराधना की है। मुनि हो अथवा समण, उसके लिए सत्य, ब्रह्मचर्य जैसे मौलिक व्रत सिद्धान्ततः निरपवाद पालनीय होते हैं। उनकी मूल्यवत्ता के सामने यह नश्वर जीवन कुछ नहीं है।

वस्तुतः ब्रह्मचर्य का पालन दुष्कर होता है। और खतरे के स्थान में रहकर भी उसको विशुद्ध रखना महादुष्कर होता है। उत्तराध्ययन का यह घोष इस बात को बलवान् बनाता है-

'उग्गं महव्वयं बंभं, धारेयव्वं सुदुक्करं– उग्र ब्रह्मचर्य महाव्रत को धारण करना बहुत ही कठिन कार्य है। प्रस्तुत प्रसंग में उत्तराध्ययन के टिप्पणों में एक ऐतिहासिक प्रसंग दिया गया है, वह इस प्रकार है-

चतुर्मास प्रारम्भ होने को था। स्थूलिभद्र सहित चार मुनि आचार्य सम्भूतविजय के पास आए। सबने गुरुचरणों में अपना-अपना निवेदन प्रस्तुत किया। एक ने कहा-गुरुदेव ! मैं सिंह की गुफा में अपना चतुर्मास बिताना चाहता हूं। दूसरे ने सांप की बांबी पर साधना करने की इच्छा प्रगट की। तीसरे ने पनघट की घाट पर और चौथे मुनि ने कोशा वेश्या की चित्रशाला में रहने की अनुमति चाही। गुरु ने उन्हें स्वीकृति दे दी।

चार मास बीते। सभी निर्विघ्न साधना सम्पन्न कर आचार्य के पास आए। आचार्य ने पहले मुनि को 'दुष्कर कार्य करने वाले' के संबोधन के संबोधित किया। उसी प्रकार दूसरे, तीसरे मुनि के लिए भी यही सम्बोधन प्रयुक्त किया। किन्तु स्थूलिभद्र को देखते ही आचार्य ने उन्हें 'दुष्कर-दुष्कर, महादुष्कर' कहकर संबोधित किया। तीनों मुनियों को गुरु का यह कथन बहुत अखरा। वे अपनी बात कहें उससे पूर्व ही आचार्य ने उनको समाहित करते हुए कहा– शिष्यों! स्थूलिभद्र कोशा वेश्या की चित्रशाला में रहा। सब प्रकार से सुविधाजनक चिरपरिचित स्थान, अनुकूल वातावरण, प्रतिदिन षड्रस भोजन का आसेवन और फिर कोशा के हावभाव। सब कुछ होते हुए भी क्षण भर के लिए मन का विचलित न होना, कामभोगों के रस को जानते हुए भी ब्रह्मचर्य व्रत की कठोर साधना करना कितना महादुष्कर कार्य है? यह वही कोशा है, जिसके साथ ये बारह वर्ष तक रहे थे। वहां रहकर इन्होंने अपनी साधना ही नहीं की है, अपितु कोशा जैसी वेश्या को भी एक अच्छी श्राविका बनाया है। अतः इनके लिए यह सम्बोधन यथार्थ है।

उनमें से एक मुनि ने गुरुवचनों पर विपरीत श्रद्धा करते हुए कहा कोशा के यहां रहना कौन-सा महादुष्कर कार्य है? वहां तो हर कोई साधना कर सकता है। आप मुझे अनुज्ञा दें, मैं अगला चतुर्मास वहां बिताऊंगा। आचार्य नहीं चाहते थे कि वह मुनि देखादेखी से ऐसा करे। बार-बार गुरु के निषेध करने पर भी उसने अपना आग्रह नहीं छोड़ा। अन्त में वही हुआ जो होना था। चतुर्मास बिताने के लिए वह कोशा के यहां पहुंच गया। (क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु ई-मेल करें
abtyptt@gmail.com

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

दिसम्बर 2024 सप्ताह के विशेष दिन

25 दिसम्बर – भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक

26 दिसम्बर – भगवान पार्श्वनाथ दीक्षा कल्याणक

27 दिसम्बर – भगवान चन्द्रप्रभु जन्म कल्याणक

28 दिसम्बर – भगवान चन्द्रप्रभु दीक्षा कल्याणक

29 दिसम्बर – भगवान शीतलनाथ केवलज्ञान

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्य श्री जीतमलजी युग

मुनिश्री पृथ्वीराजजी (उदयपुर) दीक्षा क्रमांक 216

मुनिश्री ने अपने संयमी जीवन को विकसित करने के लिए बहुमुखी आयाम खोले। आपके द्वारा किये त्याग–तप आदि की झांकी इस प्रकार है–

सं. 1938 में आजीवन दूध का त्याग।

सं. 1942 में आजीवन सेलड़ी की वस्तु (जिसमें चीनी, गुड़ आदि मिले हो) का त्याग।

सं. 1944 में आजीवन घृत के अतिरिक्त पांच विगय खाने का त्याग।

सं 1975 में आजीवन धारणा व पारणा के अतिरिक्त घृत खाने का त्याग, (15 महिने) तेले–तेले तप किया।

सं. 1978 में आजीवन एकान्तर तप स्वीकार किया। जो छः वर्ष साढ़े चार मास चला।

उपवास से लेकर 9 तक चौविहार लड़ीबद्ध तप तथा अनेक थोकड़े किये। आपके फुटकर तप की तालिका इस प्रकार है– उपवास/100, 2/42, 3/8, 4/18, 5/18, 8/12। शीतकाल में आजीवन एक पछेवड़ी में रहकर शीत सहन किया तथा उष्णकाल में आतापना बहुत ली।

– साभार: शासन समुद्र –

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
16 दिसम्बर- 22 दिसम्बर, 2024

संक्षिप्त खबर

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

छापर। भिक्षु साधना केंद्र में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में प्रेक्षा ध्यान कार्यशाला का आयोजन डॉ. मुनि विनोद कुमार जी के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र द्वारा किया गया और महिला मंडल की बहनों के द्वारा प्रेक्षा ध्यान गीत के द्वारा मंगलाचरण हुआ। महिला मंडल अध्यक्ष मंजू देवी दुधोडिया ने सबका स्वागत किया। कार्यशाला में मुनिश्री ने प्रेक्षा ध्यान के बारे में जानकारी दी और कहा कि प्रेक्षा का मतलब गहराई से चिंतन करना होता है। ध्यान एवं श्वास के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए ध्यान के प्रयोग करवाए गए। मंत्री हेमलता दूधोडिया ने सभी का आभार ज्ञापित किया।

अभिनव सामायिक का आयोजन

कोयम्बतूर। तेरापंथ जैन भवन में मुनि दीप कुमारजी ठाणा-2 के सान्निध्य में अभिनव सामायिक का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 80 भाई-बहनों की उपस्थिति रही। मुनि दीपकुमार जी ने कहा- शनिवार की सामायिक के साथ यह अभिनव सामायिक का प्रयोग गुरुदेव तुलसी द्वारा प्रदत्त एक अभिनव उपक्रम है। मुनिश्री ने अभिनव सामायिक के प्रयोग कराए।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002 पर व्हाट्सअप** अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।
5. समाचार भेजने वाला अपना नाम व मोबाइल नंबर समाचार के साथ अवश्य उल्लेख करें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्यात्म का महत्त्व' कार्यशाला का आयोजन

गुवाहाटी।

मुनि प्रशांत कुमारजी, मुनि कुमुद कुमारजी के पावन सान्निध्य एवं छत्तीसगढ़ के राज्यपाल रमेन डेका के मुख्य आतिथ्य में 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्यात्म का महत्त्व' कार्यशाला आयोजित हुई।

समारोह को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमारजी ने कहा - जैनधर्म में भक्तामर, कल्याण मंदिर बहुत प्रसिद्ध है। ये चमत्कारी-कल्याणकारी स्रोत है। तीर्थंकर परमात्मा जगत का उद्धार करने वाले हैं। वे धर्म प्रवर्त्तक थे। क्षमा का महान सूत्र उन्होंने दिया।

उन्होंने स्व-पर कल्याण का पथ बतलाया। आज पूरे विश्व में सबसे बड़ी आवश्यकता है अध्यात्म की। परिवार, समाज में समस्या बढ़ती जा रही है। हिंसा हो रही है। युद्ध एवं अपराध बढ़ रहे हैं।

अध्यात्म के बिना भाईचारा - मैत्री भाव रह नहीं सकता। मजहब, पंथ, सम्प्रदाय विकसित हो रहे हैं, लेकिन अध्यात्म को अधिक विकसित करने की अपेक्षा है। भगवान महावीर का महत्वपूर्ण मैत्री संदेश पूरा विश्व अपना ले तो बहुत सारी समस्या अपने आप दूर हो जाएगी। मानवीयता की भावना हमें विकसित करनी चाहिए। हम दूसरों के जीने के अधिकार को समझें। सबके विकास में सहयोगी बनें। धर्म जोड़ने वाला है।

आचार्य तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ के पश्चात आचार्य श्री महाश्रमणजी अहिंसा, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान के माध्यम से पूरे विश्व को संदेश दे रहे हैं। धर्म के बिना जीवन का, समाज का सही मायने में विकास नहीं होता है। समाज, देश में जितना अध्यात्म का भाव बढ़ता जाएगा उतना ही स्वस्थ समाज का निर्माण होगा।

छत्तीसगढ़ के महामहिम राज्यपाल रमेन डेका ने कहा- वर्तमान समय में अध्यात्म उतना ही जरूरी है, जितना हमारे लिए भोजन, पानी और श्वास। परिस्थिति अनुकूल रहे या प्रतिकूल हमें अपनी श्रद्धा और विश्वास के प्रति तटस्थ रहना है। सबकी उन्नति हो, सबका विकास हो, सब सुखी रहे, बुजुर्गों का सम्मान रहे, लेकिन अध्यात्म की लक्ष्मण रेखा का ज्ञान हर वक्त रहे। मिल-बांटकर खाना हमारी संस्कृति है, छीनकर खाना विकृति है। हमें यह सोचना है कि हम समाज को क्या दे सकते हैं। भगवान महावीर का संदेश अहिंसा परमधर्म का पालन अवश्य करना चाहिए। हम सबको पर्यावरण की सुरक्षा पर ध्यान देना चाहिए। हमारी इच्छा पर हमें नियंत्रण करना चाहिए। कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रगान से हुआ। सभाध्यक्ष बाबूलाल सुराणा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया।

महामहिम राज्यपाल का परिचय सभा मंत्री राजकुमार बैद ने दिया। आभार कोषाध्यक्ष छत्तरसिंह भादानी ने व्यक्त किया।

कार्यक्रम का संचालन सभा के वरिष्ठ सहमंत्री राकेश जैन ने किया। सभी संघीय संस्थाओं द्वारा राज्यपाल का स्वागत-अभिनंदन किया गया।

त्रिदिवसीय जीवन विज्ञान दिवस समारोह आयोजित

जसोल।

महाप्रज्ञ अलंकरण के उपलक्ष्य मे त्रिदिवसीय जीवन विज्ञान दिवस समारोह अणुव्रत विश्व भारती के तत्वावधान मे अणुव्रत समिति जसोल के उपलक्ष्य में स्थानीय खेतेशवर शिक्षण उच्च माध्यमिक विद्यालय माजीवाला जसोल मे जीवन विज्ञान के माध्यम से सुन्दर कार्यक्रम आयोजित हुआ।

सर्व प्रथम मां सरस्वती के चरणों मे दीप प्रज्ज्वलित किया। मंगलाचरण अणुव्रत समिति के प्रचार प्रसार मन्त्री डुंगरचन्द बागरेचा ने किया व अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा ने स्वागत भाषण दिया।

जीवन विज्ञान के प्रशिक्षक ट्रेनर सह संयोजक ममता गोलेच्छा, प्रशिक्षक ट्रेनर सह संयोजक मीना ओस्तवाल, प्रशिक्षक ट्रेनर पिंकी सालेचा ने जीवन विज्ञान के प्रयोग के माध्यम से विभिन्न सुन्दर प्रयोग श्वास व प्रणायाम कुछ योग व्यायाम प्रणायाम प्रेक्षा ध्यान केंद्रित करवाए।

ॐ ध्वनी, आँखो की क्रिया व संकल्प दिला। अणुव्रत समिति जसोल के द्वारा स्कूल के प्रधानाचार्य पृथ्वीराज दवे, मैनेजर मुल्तानसिंह राजपुरोहित का अणुव्रत दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया गया। इस कार्यक्रम में स्कूल के लगभग चार सौ से ऊपर विद्यार्थी सहित प्रधानाचार्य पृथ्वीराज दवे, मैनेजर मुल्तानसिंह राजपुरोहित, समस्त अध्यापकगण, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा, मन्त्री सफरु खान, प्रचार प्रसार मन्त्री डुंगरचन्द बागरेचा आदि उपस्थित थे।

आभार व्यक्त स्कूल के प्रधानाचार्य पृथ्वीराज दवे ने किया वंही कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत मन्त्री सफरु खान ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
16 दिसम्बर- 22 दिसम्बर, 2024

दिल्ली स्तरीय मंगल भावना समारोह समायोजित

दिल्ली।

दिल्ली सभा के तत्वावधान में साध्वी अणिमाश्रीजी के दिल्ली के द्विवर्षीय सफलतम प्रवास तथा दिल्ली से सिंवाची मालाणी की ओर प्रस्थान के अवसर पर दिल्ली स्तरीय मंगलभावना समारोह, डॉ. साध्वी कुंदनरेखाजी के सान्निध्य में अणुव्रत भवन में समायोजित हुआ। साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने उद्बोधन में कहा हमारा तेरापंथ धर्मसंघ हिमगिरी के तुल्य है जिसकी चोटी पर श्रद्धा व समर्पण प्रतिष्ठित है।

परमपूज्य गुरूदेव की कृपा से हमें दो वर्ष तक दिल्ली में काम करने का अवसर प्राप्त हुआ। दिल्ली का श्रावक समाज प्रबुद्ध, संघ और गुरु के प्रति समर्पित है। साधु-साध्वियों के इंगित की आराधना में हरपल जागरूक है। शाहदरा एवं पीतमपुरा पावस हमारे जीवन पोथी में सुनहरे अक्षरों में अंकित रहेगा। दिल्ली सभा के तत्वावधान में भारत मंडपम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की गरिमामय उपस्थिति में भगवान महावीर निर्वाणोत्सव का जो भव्य संघप्रभावक कार्यक्रम हुआ वह दिल्ली सभा के इतिहास का दुर्लभ दस्तावेज होगा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत की उपस्तिथि में विज्ञान भवन का कार्यक्रम एवं संसद भवन में अणुव्रत संगोष्ठी का आयोजन भी संघ प्रभावना को अभिवर्धित करने वाला रहा। जो कुछ भी हुआ वह गुरु कृपा एवं गुरुदेव के मंगल आशीर्वाद से हुआ। मैं सब कुछ पूज्यचरण में समर्पित कर आनंद की अनुभूति कर रही हूँ एवं यही मंगलकामना करती हूँ की पूज्यचरण के आशीर्वाद से निरामयता के साथ संघ प्रभावना में योगभूत रहूँ।

साध्वीश्री ने कहा आज इस कार्यक्रम में डॉ. साध्वी कुंदनरेखाजी का सान्निध्य मन उपवन को सरसब्ज बना रहा है। साध्वी कुंदनरेखाजी हमारे धर्मसंघ की प्रबुद्ध एवं ओजस्वी वक्ता साध्वी हैं। उनकी दबंगता एवं कर्मठता अनुकरणीय है। मिलनसारिता एवं दिल की उदारता मन को अभिभूत करने वाली है। साध्वी सौभाग्ययशाजी एवं साध्वी कल्याणयशाजी ने भी अच्छा विकास किया है एवं आगे भी करते रहें। दिल्ली सभा बड़ी सजग एवं सक्रिय सभा है। अपने दायित्व का बखूबी निर्वहन कर रही है। साधु साध्वियों की जो चिकित्सा सेवा करती है वह सभी सभाओं के लिए अनुकरणीय है। सभी धर्मसंघ की गौरव वृद्धि करते रहें मंगलकामना।

साध्वी डॉ. कुंदनरेखाजी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति देते हुए कहा तेरापंथ धर्मसंघ विशिष्ट धर्मसंघ है। आचार्य भिक्षु ने मर्यादा व अनुशासन के अमृत से इसकी नीवों को सींचा है। आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञजी व आचार्य श्री महाश्रमणजी ने इस धर्मसंघ को शिखरों तक पहुंचाया है। साधु-साध्वियां भी अपने श्रम से संघ की जड़ों को सिंचन दे रहे हैं। साध्वी अणिमाश्री जी ने दो वर्ष तक दिल्ली में श्रम की अलख जगाई। आज इनका मंगलभावना समारोह है। हम तो बधाई के साथ-साथ इनके कार्यों की वर्धापना कर रहे हैं। तेरापंथ धर्मसंघ में वही व्यक्ति आगे बढ़ सकता है जिसकी भक्ति, शक्ति, और अनुरक्ति प्रगाढ़ होती है। साध्वीश्री के पास आत्मबल के साथ-साथ अध्यात्म की शक्ति है जो अंधेरे को उजाले में बदलने का प्रयास कर रही है। इनकी गुरुभक्ति और गणभक्ति दोनों बेजोड़ है। साधना के प्रति प्रबल अनुरक्ति ने इनके जीवन को तेजस्वी बनाया है।

साध्वी सौभाग्ययशाजी ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। साध्वी सौभाग्ययशाजी एवं साध्वी कल्याणयशाजी ने साध्वी कुंदनरेखाजी के साथ मंगल गीत के द्वारा यात्रा के लिए मंगलभावना संप्रेषित की।

साध्वी कर्णिकाश्रीजी एवं साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने भी विचार व्यक्त किए। डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने कहा संघ समन्दर के महनीय रत्नों में एक नाम है साध्वी अणिमाश्रीजी का। आपकी सफलता की कहानी आगे बढ़ने वालों के लिए प्रेरणा है।

दिल्ली सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया ने कहा- साध्वी अणिमाश्रीजी श्रम की अकथ कहानी है। आपकी प्रबुद्धता, साधना, आचारनिष्ठा, मर्यादानिष्ठा सबको बाँधने वाली है।

आपकी विलक्षण प्रवचनशैली सबके दिलों में उतर जाती है। आपकी वत्सलता सबको जोड़ने वाली है। दिल्ली वासियों को 2027 के आचार्य प्रवर के पावस का जो उपहार मिला है उसमें आप का विशेष श्रम रहा है।

कल्याण परिषद् के संयोजक के. सी. जैन, महासभा से आंचलिक प्रभारी के. के. जैन, अभातेममं की उपाध्यक्ष सुमन नाहटा, जै. वि. भा. के उपाध्यक्ष पन्नालाल बैद, दिल्ली प्रांत संघ संचालक अनिल कुमार, सभा एवं तेयुप के पदाधिकारीगण ने भी अपने विचारों की प्रस्तुति दी। दिल्ली सभा की गायक मंडली ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी। महिला मंडल ने भाव पूर्ण गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया।

व्रत चेतना एवं तपस्या का अभिनंदन समारोह

गांधीनगर, बेंगलुरु।

तेरापंथ युवक परिषद बेंगलुरु (तेयुप) द्वारा "सम्मान व्रत चेतना - सम्मान बारह व्रत का" कार्यक्रम का आयोजन साध्वी उदितयशा जी ठाणा-4 के सान्निध्य में हुआ। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य समाज में व्रत संकल्पों के प्रति चेतना जागृत करना तथा संयम और मर्यादित जीवन का महत्व प्रतिपादित करना था।

साध्वी उदितयशा जी ने अपने आध्यात्मिक प्रवचन में श्रावकों के लिए भगवान महावीर के बताए हुए संयम पथ की व्याख्या करते हुए कहा कि पूर्ण संयम का पालन कठिन हो सकता है, परंतु आवश्यकताओं का सीमांकन कर और भौतिक वस्तुओं के उपभोग में मर्यादा रखकर एक व्रती जीवन सहजता से अपनाया जा सकता है। साध्वीश्री जी ने बताया कि यदि व्रत चेतना को जागृत किया जाए, तो ये संकल्प हमारे जीवन को संयममय और पवित्र बनाएंगे, जो धर्म के सच्चे मार्ग पर अग्रसर होने का आधार है। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी उदितयशा जी द्वारा मंगल मंत्रोच्चार के साथ हुई, जिससे वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से भर गया। तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष विमल धारीवाल ने साध्वीश्री की प्रेरणा और परिश्रम के प्रति समाज की कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उपस्थित जनों का स्वागत किया। इस पावन अवसर पर 12 व्रती श्रावक-श्राविकाओ, जो समाज में संयम और व्रत संकल्प की मिसाल बन गए हैं, उनका जैन पट्ट और सम्मान प्रशस्ति पत्र देकर अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री राकेश कुमार चोरड़िया द्वारा अत्यंत कुशलता के साथ किया गया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली सभा मंत्री विनोद छाजेड़, कोषाध्यक्ष प्रकाश कटारिया, ज्ञानशाला से माणक चंद संचेती, पूर्व अध्यक्ष बहादुर सेठिया महिला मंडल अध्यक्षा रिजुबाला डुंगरवाल एवं समाज के गणमान्य व्यक्ति, श्रद्धालु और धर्मानुरागी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

तेरापंथ युवक परिषद बेंगलुरु का यह आयोजन समाज में व्रत संकल्पों और संयमपूर्ण जीवन के प्रति एक अमूल्य प्रेरणा बना, जिसे श्रद्धालुओं और समाज के सभी वर्गों ने अत्यंत सराहा ।

सम्मान व्रत चेतना का कार्यक्रम आयोजित

गुवाहाटी।

मुनि प्रशांत कुमारजी, मुनि कुमुद कुमारजी के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद गुवाहाटी के आयोजन में सम्मान व्रत चेतना का कार्यक्रम आयोजित हुआ। जनसभा को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमारजी ने कहा - व्यक्ति का मन चालक होता है। प्रकृति का नियम है 'जो बोओगे वो काटोगे'। विज्ञान का नियम है 'जैसी क्रिया होगी वैसी प्रतिक्रिया होगी।

धर्म का सिद्धांत है - जैसी करनी वैसी भरनी। व्यक्ति चाहता है पुण्य का फल मिल जाए। व्यक्ति पुण्य का फल चाहता है लेकिन कार्य वह करता है जिससे पाप बढ़ता है। पुण्य बढ़े वह कार्य नहीं करता है। पापकारी प्रवृत्ति करके सुख, शांति, आनन्द कैसे मिल सकता है।

हमें धर्म के मूल तथ्य को समझना है। जब तक धर्म के मर्म को नहीं जानते-मानते हैं तब तक वास्तविक धर्म का स्वरूप जीवन में आत्मसात् नहीं होगा। मन का स्वभाव है नीचे की ओर जाना है। वैसे ही व्यक्ति को धर्म पसंद नहीं है क्योंकि मन भौतिकता की ओर अधिक आकर्षित रहता है। अध्यात्म के लिए संकल्प-प्रयास करना पड़ता है। बारह-व्रत नियम बहुत सारे पाप से बचाते हैं। समुद्र जितना पाप व्रत नियम से बहुत सीमित होकर रह जाता है। बारह व्रत धारण करने से पाप की सीमा हो जाती है। जब तक अव्रत रहता है तब तक पाप लगता रहता है। जीवन में धर्म की भावना सदैव रहनी चाहिए। व्रत-प्रत्याख्यान के लिए गुवाहाटी तेरापंथ युवक परिषद साधुवाद के पात्र है।

श्रावक समाज को बारहव्रती बनाने में समय का नियोजन किया है। मुनि श्री कुमुद कुमारजी ने कहा- जीवन में धर्म का बहुत महत्व होता है। धर्म से कर्म क्षीण होता है। आसक्ति की चेतना जागृत होती है। व्रत श्रावक जीवन का आधार है। उससे ही श्रावक जीवन का प्रारम्भ होता है। जिनकी मोह चेतना जागृत होती है उसे त्याग-प्रत्याख्यान, धर्म-अध्यात्म में रुचि नहीं होती है। धर्म हमें पापकर्म से बचाता है। श्रावक के बारह व्रत एवं जैन जीवनशैली के नौ आयाम व्यक्ति के सुखी जीवन के बहुत बड़े सूत्र है।

श्रावक जीवन होना अपने आप में गौरव है। वर्तमान समय का उपयोग धर्म चर्चा में किया जाता है तो अनावश्यक पाप से बच जाते हैं।

भगवान महावीर ने चार तीर्थ की स्थापना की साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका। जिन्होंने श्रावक के व्रतों को ग्रहण किया वे ही श्रावक कहलाए अन्यथा सिर्फ अनुयायी कहलाए।

कार्यक्रम संयोजक श्री रवि बुच्चा ने जानकारी देते हुए बताया पूरे भारतवर्ष में मुनिश्रीजी के प्रेरणा एवं तेरापंथ युवक परिषद के प्रयास से गुवाहाटी ने पांचवां स्थान प्राप्त किया है।

तेयुप अध्यक्ष सतीश भादानी ने विशेष प्रस्तुति दी। आभार राहुल नाहटा ने व्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन तेयुप मंत्री पंकज सेठिया ने किया।

भूल सुधार

अंक 8 के पृष्ठ 19 में प्रकाशित 'अहिंसा, संयम और तप का आराधन करने वाले का कल्याण है निश्चित' में 'साध्वीप्रमुखाओं के कार्य को देखना है गरिमा की बात' बिंदु में 'मुनिश्री धर्मचंदजी' को 'मुनिश्री धर्मरुचि जी' पढ़ा जाए।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
16 दिसम्बर- 22 दिसम्बर, 2024

मेधावी छात्रों का किया गया सम्मान

दिल्ली।

दिल्ली के अणुव्रत भवन में टीपीएफ द्वारा मेधावी छात्र सम्मान समारोह डॉ. साध्वी कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। साध्वीश्री ने बच्चों को जीवन में सफल बनने के लिए प्रेरणा दी।

टीपीएफ दिल्ली की अध्यक्ष कविता बरड़िया ने सभी सम्मानित अतिथियों का सम्मान किया एवं प्रतिभावान विद्यार्थियों का अभिनन्दन करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। टीपीएफ नार्थ जोन अध्यक्ष राजेश जैन ने बच्चों को सर्वांगीण विकास करने एवं सफलतम बनने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम में 100 से अधिक प्रतिभावान बच्चों का सम्मान मेडल एवं सर्टिफिकेट प्रदान कर किया गया। बच्चों के साथ में बड़ी संख्या में उनके अभिभावक भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

मुख्य अतिथि प्रणव शर्मा (प्रेसिडेंट बैद्यनाथ समूह) ने चुनौतियों का सामना करते हुए सफल उद्यमी बनने की प्रेरणा दी।

गेस्ट ऑफ ऑनर टीपीएफ ट्रस्टी पुष्प जैन (केएलजे ग्रुप) ने सफल बनने एवं असफलताओं व प्रतिकूलताओं का सामना करने पर अपने विचार बड़े रखे।

टीपीएफ गौरव संपतमल नाहटा ने समय प्रबंधन एवं जीवन की प्राथमिकता निर्धारित करने पर अपने विचार रखें। नवनीत दुगड़ का विशेष मार्गदर्शन रहा।

कार्यक्रम के आयोजन में टीपीएफ मेंटर श्री लुंकड़ का महनीय सहयोग रहा। बच्चों के लिए ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक क्विज की प्रस्तुति रही जिसमें बड़ी संख्या में बच्चों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में दिल्ली सभा उपाध्यक्ष बाबूलाल दुगड़ एवं रणजीत सिंह भंसाली की गरिमामय उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के सफल आयोजन में मेधावी सम्मान प्रभारी प्रीति दुगड़, कमल रामपुरिया आदि अनेकों कार्यकर्ताओं का विशेष श्रम रहा।

आगंतुक सभी अभिभावकों एवं बच्चों ने दिल्ली टीपीएफ अध्यक्ष कविता बरड़िया एवं उनकी टीम द्वारा बच्चों को प्रोत्साहित करने वाले सफल आयोजन प्रशंसा की। आभार ज्ञापन कोषाध्यक्ष दीपक कुचेरिया ने किया।

पति-पत्नी एक दूसरे के सुख-दुःख में भागीदार बनें

साउथ हावड़ा। मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तथा तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा के तत्वावधान में प्रेक्षा विहार में दम्पत्ति शिविर का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा - दुनिया में अनेक रिश्ते हैं, उनमें महत्वपूर्ण रिश्ता है दंपत्ति का रिश्ता। दाम्पत्य जीवन में खुशहाली के लिए जीवन में सहिष्णुता, समर्पण, सामंजस्य, सहयोग, स्नेह, आदि के भाव होने चाहिए।

पति-पत्नी एक दूसरे के सुख-दुःख में भागीदार बनें, विचारों को मान सम्मान दें। व्यक्तिगत कार्य में हस्तक्षेप न करें। मुनि श्री ने आगे कहा - आदमी व्यसन और औरत फैशन छोड़े तो घर में शांति का साम्राज्य स्थापित हो जायेगा। सहिष्णुता से शक्ति बढ़ती है, जो सहता है वह रहता है, शेष गिर जाते हैं । मंत्री अमित बेगवानी व मंगलाचरण एवं संचालन मुनि कुणाल कुमार जी ने किया। प्रदीप पुगलिया ने व चन्द्रकांता बाई ने विचार रखे।

पृष्ठ 1 का शेष

जीवन सादगी और चिंतन...

पूज्यवर के नागरिक अभिनंदन के सन्दर्भ में नगरपालिका अध्यक्ष ललिता राजपुरोहित ने अपनी भावनाएं व्यक्त की। सभा अध्यक्ष बक्तावरमल सिंघवी एवं जिनेंद्र कोठारी ने अपने विचार व्यक्त किए। स्थानीय महिला मंडल ने गीत के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। नगरपालिका एवं नगर की प्रमुख संस्थाओं द्वारा नगर की प्रतीकात्मक चाबी भेंट कर गुरुदेव का नागरिक अभिनंदन किया गया। ज्ञानशाला के बच्चों ने सुंदर प्रस्तुति दी। नगरपालिका की ओर से जनक भाई ने तथा जैन संघ की ओर से हेमंतभाई शाह ने भी अपनी भावनाएं प्रकट की।

कार्यक्रम में अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष प्रताप दूगड़ ने आगामी कार्यकाल के कार्यकारी सदस्यों की घोषणा कर उन्हें शपथ ग्रहण करवाई। अणुव्रत नियम पट्ट स्थानीय विद्यालय को प्रदान किए गए। अणुव्रत विश्व भारती द्वारा पर्यावरण जागरूकता अभियान का आयोजन भी हुआ। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

पृष्ठ 11 का शेष

अच्छी जीवनशैली अपनाकर..

गरीबों और दुखियों को दान देने से आपकी दयालुता प्रकट होती है, और देने वाले के प्रति उनके मन में भी अच्छी भावना उत्पन्न होती है। हालांकि, यह एक सांसारिक संबंध है और इसमें आध्यात्मिक धर्म का लाभ नहीं मिलता। संसार में परस्पर सहयोग की परंपरा चलती रहती है। मित्र को कुछ देने से मित्रता गहरी होती है, और दुश्मन को कुछ देने से दुश्मनी दूर हो सकती है। नौकर-चाकर को अतिरिक्त देने से वे आपकी सेवा में और तत्पर होते हैं। राजा-मंत्री आदि को भेंट देने से वे सहयोग करने के लिए प्रेरित हो सकते हैं। दान चाहे किसी को भी दें, उसका कोई न कोई फल अवश्य होता है। लेकिन शुद्ध साधु को शुद्ध दान देने की भावना रखना आवश्यक है।

साधु-संतों से शास्त्रों को सुनने का प्रयास करें। गुणीजन के प्रति विनय और प्रमोद की भावना रखें। अर्हतों की भक्ति और भाव पूजा करें, गुरु की उपासना करें। मानव जीवन मिला है, तो इसे सुफल और सफल बनाने का प्रयास करें। मानव जन्म एक बार मिला है, और यह दोबारा कब मिलेगा, इसका कोई पता नहीं। इसलिए वर्तमान मानव जीवन का धार्मिक दृष्टि से लाभ उठाने का प्रयास करें।

अहिंसा, संयम, और तप रूपी धर्म को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं। सबके साथ सद्भावना रखें, अनावश्यक कलह से बचें। एक अच्छी जीवनशैली अपनाकर मानव जीवन को सफल बनाया जा सकता है। दूसरों को भी जितना संभव हो, धार्मिक सहयोग प्रदान करें और सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करें। यही मानव जीवन की सफलता है। विद्यालय की ओर से प्रिंसिपल हरीशभाई पटेल ने पूज्यवर के स्वागत में अपनी भावनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

बोलती किताब

श्रावक धर्म

भगवान महावीर घर छोड़कर मुनि बन गए। बारह वर्ष से अधिक समय तक साधना की। साधना-काल में प्राय:मौन रहे। कभी-कभी बोले और वह भी बहुत कम। साधना का फल मिला, केवली बल गए। केवली होने के पश्चात् उन्होंने प्रवचन शुरू किया,बहुत प्रवचन दिए। उन्होनें कोई ग्रन्थ नहीं लिखा। वे केवल बोलते थे।

केवल ज्ञान-मीमांसा से काम नहीं चलता, उसके साथ आचार की मीमांसा का होना भी जरूरी है। मेरा आचार कैसा होना चाहिए? बहुत लोगों को इस संदर्भ में सोचने का भी मौका नहीं मिलता। कितने लोग हैं, जो एक घंटा शांत मुद्रा में बैठकर अपने बारे में सोचते हैं, विचार करते हैं? शायद बहुत कम मिलेंगे।

यह प्रश्न मन में ही नहीं आता कि भीतर आत्मा नाम की कोई चीज है। उस ओर मनुष्य का ध्यान ही नहीं जाता, किंतु जिन आत्माओं में अंतर्ज्योति जग गई,अतीन्द्रिय चेतना जग गई, उन्होंने देखा कि यह तो सारा पुद्गल है, हम तो भीतर बैठे हैं, भीतर कुछ और हैं।

जैन धर्म में गृहस्थश्रावक का कम महत्त्व नहीं रहा है। साधना के क्षेत्र में श्रावक और साधु-दोनों का महत्त्व रहा है और उनका बहुत मूल्य है। श्रावकों के द्वारा शासन की प्रभावना बहुत होती है। हमारी एक मन की दुनिया हैं, वहा सारी विषमताएं होती है। जब हम मन से परे, अमन की स्थिति में चले जाते हैं, जहां मन समाप्त होता है, केवल चेतना रहती है-वह एक अलग दुनिया हैं।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव का आयोजन

पीलीबंगा।

साध्वी सुदर्शनाश्री जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का आयोजन हुआ। नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के पश्चात ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों के द्वारा मंगलाचरण किया गया। अंकिता सुराणा ने कार्यक्रम में आए हुए सभी अतिथियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। साध्वी सुदर्शनाश्री जी ने कहा ज्ञानशाला एक ऐसा उपक्रम है जहां छोटे छोटे नौनिहाल सद् संस्कारों का अर्जन करते हैं। ज्ञानशाला तक इन बच्चों को पहुंचाने का काम माता-पिता और घर के बड़े बुजुर्गों का है। इसलिए यह सभी की सामूहिक जिम्मेदारी भी है। अंत में सभी बच्चों को पुरस्कार वितरित किए गए। बच्चों ने 'Don't use me' नाटिका की रोचक प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला क्षेत्रीय प्रभारी प्रतिभा दुगड, महासभा आंचलिक प्रभारी देवेंद्र बांठिया ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी लक्षितप्रभाजी ने ज्ञानशाला की उपयोगिता के बारे में बताया।

तेरापंथी सभा के संगठन मंत्री ओम प्रकाश पुगलिया ने स्थानीय ज्ञानशाला टीम की भूरी-भूरी प्रशंसा की और सभा के द्वारा तपस्वियों एवं प्रशिक्षिकाओं का सम्मान किया गया। ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव समारोह के प्रायोजक हीरालाल, हंसराज, गुलाब बांठिया परिवार का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन सतीश पुगलिया ने किया।

स्वाध्याय बनता है पथदर्शन का माध्यम : आचार्यश्री महाश्रमण

रायमा।
03 दिसम्बर, 2024

गांव-गांव, शहर-शहर लोगों का कल्याण कराते हुए परम पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ भांडोल से विहार कर रायमा के सरकारी विद्यालय में पधारे। अमृत देशना प्रदान करते हुए शांति दूत ने फरमाया कि हमारे आध्यात्मिक साधना जीवन में स्वाध्याय का विशेष महत्व है। स्वाध्याय से न केवल जानकारियां प्राप्त होती हैं, बल्कि यह पथदर्शन का भी माध्यम बनता है।

पुस्तकें भी एक प्रकार की मित्र होती हैं। ये ऐसी मित्र हैं जिन्हें कितने ही घंटे अपने पास रखा जा सकता है। वे लंबे समय तक हमारे साथ रहकर सुंदर ज्ञान, अच्छी शिक्षा और उचित सलाह प्रदान करती हैं। जो व्यक्ति स्वाध्यायशील होता है, जिसमें अध्ययन की रुचि होती है, और यदि वह धार्मिक संदर्भों में अध्ययन करता है, तो उसका समय शुभ कार्यों में व्यतीत होता है। जिनोपदिष्ट बारह प्रकार के तपों में से स्वाध्याय, जो तप का दसवां भेद है, अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्वाध्याय के समान न तो कोई दूसरा तप है और न ही कोई होगा। स्वाध्याय के वाचन, पृच्छना आदि पांच भेद हैं। यदि अच्छा उत्तरदाता हो, तो प्रश्नों का उचित समाधान मिल सकता है। उत्तर देने वाला सटीक और योग्य हो, यह आवश्यक है। स्वाध्याय में कंठस्थ ज्ञान को दोहराना, चिंतन करना, परिवर्तना करना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा का अभ्यास करना शामिल है।

प्रवचन करना भी स्वाध्याय का एक रूप है। व्याख्यान देने वाला स्वयं ज्ञानी होना चाहिए। जो प्रवचन के अभ्यासी होते हैं, वे किसी भी विषय पर बिना विशेष तैयारी के व्याख्यान देने में सक्षम होते हैं। धर्मकथा, आत्मा की निर्जरा का साधन बन सकती है और दूसरों का भी कल्याण कर सकती है। जब एक वक्ता बोलता है, तो अनेक लोगों को श्रवण का लाभ मिलता है। श्रोताओं को जागरूक रहना चाहिए, न कि सो जाना चाहिए या केवल आलोचक बनकर रह जाना चाहिए। वक्ता और श्रोता के बीच तादात्म्य होना आवश्यक है। वक्ता की कुशलता का भी विशेष महत्व है। उसे अच्छी तैयारी के साथ बोलना चाहिए, उसका ज्ञान प्रौढ़ और वाणी मधुर होनी चाहिए। प्रभावशाली वाणी से श्रोता तक संदेश आसानी से पहुँचता है। यहाँ तक कि माइक भी वक्ता के लिए सहायक हो सकता है। ज्ञान का सबसे बड़ा साधन स्वाध्याय है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की वाणी अत्यंत मधुर, गला स्पष्ट और भाषा शुद्ध थी। श्रोता भी शांत होकर उन्हें सुनने में समय देते थे, जो एक सराहनीय बात है। ज्ञान को अपने जीवन में लाने का प्रयास करना चाहिए। ज्ञानी से विधिवत ज्ञान लेने वाला पात्र भी विनीत होना चाहिए। ज्ञान का असम्यक उपयोग नहीं होना चाहिए। अध्यात्म विद्या के लिए श्रम आवश्यक है। परिश्रम करें, और सफलता प्राप्त करें। स्वाध्याय में श्रम करेंगे, तो अवश्य ही फल मिलेगा। पूज्यवर के स्वागत में शारदा विद्यालय के हितेश भाई पटेल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अच्छी जीवनशैली अपनाकर मानव जीवन को बनाएं सफल : आचार्यश्री महाश्रमण

हंसोट।
04 दिसम्बर, 2024

जिन शासन भास्कर आचार्यश्री महाश्रमणजी का हंसोट के योगी मंदिर विद्यालय में पदार्पण हुआ। पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए महायोगी ने कहा कि शास्त्रों में मनुष्य भव को दुर्लभ बताया गया है। यह मनुष्य जन्म, जो अत्यंत दुर्लभ है, जिसे प्राप्त हो जाए, उसे इसका भरपूर लाभ उठाने का प्रयास करना चाहिए। हमें वर्तमान में मनुष्य जन्म प्राप्त है, और इसे आध्यात्मिक दृष्टि से सार्थक बनाने का प्रयास करना चाहिए।

मनुष्य जन्म का लाभ उठाने के संदर्भ में कुछ महत्वपूर्ण बातें बताई गई हैं। इनमें पहली बात यह है कि प्राणियों के प्रति अनुकंपा का भाव रखना चाहिए। चाहे प्राणी छोटा हो या बड़ा, किसी की भी अनावश्यक हिंसा नहीं करनी चाहिए। सबके साथ सद्व्यवहार, सद्भावना और अहिंसा पूर्ण आचरण का प्रयास करें। अनुकंपा का भाव मानव जीवन का लाभ उठाने और पाप कर्मों से बचने का एक सशक्त उपाय है। दूसरी बात है कि सुपात्र को दान दें। दान का वितरण कोई न कोई फल अवश्य देता है। यदि शुद्ध साधु को शुद्ध दान दिया जाए, तो वह धर्म का कारण बनता है और आध्यात्मिक लाभ मिलता है। (शेष पेज 10 पर)

सम्पादकीय

मार्ग सेवा यहां महान

हाल ही में आचार्य प्रवर की सेवा उपासना में जाने का अवसर मिला। उनके पवित्र आभा मंडल, करुणामयी दृष्टि और आशीर्वाद से नव ऊर्जा का संचार हुआ। पूज्य प्रवर के आशीर्वाद एवं अभातेयुप पर्यवेक्षक मुनि श्री योगेशकुमार जी तथा मुनि श्री नयकुमार जी के मार्ग दर्शन से संघीय समाचारों के मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' के कार्यकारी सम्पादकीय दायित्व का एक वर्ष पूर्ण हुआ। इस एक वर्ष में बहुत कुछ जानने और सीखने का अवसर प्राप्त हुआ। आदरणीय अध्यक्ष श्री रमेश डागा एवं पूर्व सम्पादक श्री दिनेश मरोठी के सुझावों से किंचित कार्य करने का प्रयास किया है। मेरा प्रयास है कि आने वाले समय में इसे और अधिक प्रभावी बनाया जाए। इस बार जब पूज्य प्रवर की सेवा में उपस्थित हुआ तब मार्ग में साध्वियों के विभिन्न सिंघाड़ों को विहार करते देखा, पर एक को भी बिना किसी श्रावक के चलते नहीं देखा। मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति भुज के अंतर्गत भुज एवं नजदीकी क्षेत्रों के श्रावक-श्राविकाओं ने दायित्व हस्तांतरण के तुरंत बाद ही सेवा का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है। चातुर्मास काल का समय पूर्ण हुआ और देश विदेश में प्रवासित सैकड़ों साधु-साध्वियों ने गुरु आज्ञा अनुसार विहार चर्या प्रारंभ कर दी। वीतराग भगवान की वाणी को शिरोधार्य कर, तिन्नाणं तारयाणं के लक्ष्य के साथ चारित्रात्माएं जन कल्याण के लिए विहार करते हैं। इसमें उन्हें स्वयं तो निर्जरा का लाभ मिलता ही है, श्रावक-श्राविकाओं को भी दर्शन, प्रवचन, शय्यातर, बारहवां व्रत पूर्ण करने, रास्ते की सेवा आदि का लाभ सहज प्राप्त हो जाता है।

अक्सर जयनाद किया जाता है –
तेरापंथ की क्या पहचान – एक गुरु और एक विधान।
तेरापंथ की क्या पहचान – धर्म अहिंसा त्याग प्रधान।
इसी के साथ शायद यह भी कहा जा सकता है –
तेरापंथ की क्या पहचान – मार्ग सेवा यहां महान।

प्रायः तेरापंथ सभा के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मंडल एवं अन्य सहयोगी संस्थाएं विहार सेवा में अपनी शक्ति नियोजित करते हैं। पैदल विहार में अधिकांशतः युवक परिषद् के सदस्य श्वेत वस्त्र धारियों के साथ-साथ चलते नजर आते हैं। अन्य जैन धर्माचार्य भी हमारे धर्म संघ की रास्ते की सेवा से प्रेरणा लेने का यदा-कदा उल्लेख भी करते हैं। यह रास्ते की सेवा हमारे धर्मसंघ की एक पहचान है। देश-विदेश में कहीं भी प्रायः विहार के समय तेरापंथ धर्म संघ के साधु-साध्वियां अकेले नजर नहीं आएंगे, चाहे वे आचार्य हो, पदासीन चारित्रात्मा हो, गुरुकुलवासी या बहिर्विहारी हो, दीक्षा पर्याय में ज्येष्ठ हो या नव दीक्षित साधु-साध्वी। छोटा था तब सिखाया गया था कि साधु-साध्वी आएं तो उन्हें लेने सामने जाना चाहिए, प्रस्थान करें तो कुछ दूरी तक उन्हें पहुंचाने भी जाना चाहिएं। ये संस्कार युवक परिषद् और महिला मंडल में तो दिख जाते हैं, पर ये संस्कार धर्म संघ के हर श्रावक-श्राविका में आए और आगे से आगे पीढ़ी दर पीढ़ी संक्रांत होते रहें यह काम्य है।

अभिभावक GenNext में इन संस्कारों का बीजारोपण करे। जब कहीं चारित्रात्माओं के दर्शन सेवा के लिए जाएं और यदि संभव हो तो अपने पारिवारिक सदस्यों, विशेषकर बच्चों को अवश्य ले जाएं। इससे उनके भीतर भी संस्कार पुष्ट होंगें। गोचरी, साधु चर्या, श्रावक चर्या, सामायिक, भावना भाना आदि अनेक विषयों की जानकारी हमारी आने वाली पीढ़ी को भी हो, तभी हम अपने कर्तव्य का सम्यक निर्वहन कर पाएंगे। आइए, हम सभी अपने स्तर पर चारित्रात्माओं की मार्ग सेवा को प्राथमिकता दें और धर्मसंघ की इस उज्ज्वल परंपरा को सुदृढ़ करें।

– संपादक

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
16 दिसम्बर- 22 दिसम्बर, 2024

भाग्य जैसा भी हो, अच्छा पुरुषार्थ करते रहें : आचार्यश्री महाश्रमण

भाडोल।
02 दिसम्बर, 2024

संयम के सुमेरु आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि मनुष्य का शरीर महत्वपूर्ण होता है। इसमें पांच इंद्रियां होती हैं, साथ में पांच कर्मेंद्रियां भी होती हैं। इस मानव देह में जो जीव प्रकृष्ट साधना कर सकता है, वह अन्य किसी योनि के शरीर में, अर्थात मनुष्य के सिवाय अन्य जन्मों में, संभव नहीं हो सकती। इसलिए यह मानव देह अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मनुष्य देह प्राप्त कर व्यक्ति जीवन कैसा जीता है? जो अविनीत होता है, उसे विपत्ति मिलती है, और जो विनीत होता है, उसे संपत्ति प्राप्त होती है। ज्ञान का आभूषण विनय है। ज्ञान होने पर भी मौन रहना, यानी अवांछनीय प्रयास न करना, एक श्रेष्ठ गुण है। पांडित्य होने पर भी मौन रखना एक बड़प्पन की बात है। शक्तिशाली होने पर भी क्षमा का भाव रखना और दान देने पर भी नाम की आकांक्षा न रखना आदर्श है।

भाग्य की बात करें तो अगर स्वयं का भाग्य अच्छा हो, तो फल अवश्य मिलता है; इसमें राजा भी कुछ नहीं कर सकता। यदि भाग्य में नहीं लिखा है, तो राजा द्वारा दिया गया भी प्राप्त नहीं हो सकता। भाग्य जैसा भी हो, हम पुरुषार्थ अच्छा करते रहें। जीवन में अच्छे कार्य करते रहें। किसी का कल्याण हो सके तो करें, परंतु उसे अधिक प्रचारित न करें। संयम रखने वाले का भाग्य अच्छा निष्पन्न हो सकता है। हमें अपनी इंद्रियों और मन का संयम रखना चाहिए।

इंद्रियों के विषय स्वयं न तो राग उत्पन्न करते हैं और न द्वेष। इनमें जो व्यक्ति आसक्त या ग्रस्त होता है, वही राग और द्वेष के कारण कर्मों का बंधन कर लेता है।

इंद्रिय संयम से आत्मा का कल्याण हो सकता है। यदि किसी का उपकार किया, तो उसे करके भूल जाएं। हमारा भला प्रकृति कर देगी, क्योंकि प्रकृति कभी नहीं भूलती।

इंद्रियों का संयम, अपनी साधना, और दूसरों का कल्याण करते रहना चाहिए। जितना संभव हो, दूसरों का आध्यात्मिक उपकार करने का प्रयास करते रहें।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।